सत्यमेव जयते

धर्मपद

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वार्षिक पत्रिका - 2020, नौवां अंक



महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर-751017 (ओड़िशा)

हिंदी पखवाड़ा-2019













सांस्कृतिक झलकियाँ



















कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी गण के द्वारा प्रस्तुत
हिंदी नाटक “बीमा नहीं बना तो भरो जुर्माना”

विदाई समारोह की एक झलक



श्री एस.पी.राव , वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

सेवानिवृति तिथि - 29.01.2021

वार्षिक पारिवारिक मिलन समारोह की झलकियाँ



पत्रिका परिवार



श्री बिभुदत्त बसंतिया
महानिदेशक लेखापरीक्षा

मुख्य संरक्षक



श्री दुसासन बेहेरा
उप निदेशक

संरक्षक

मार्गदर्शक

श्री धीरेन कुमार द्विवेदी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



मुख्य संपादक

श्री दीपक कुमार दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



संपादक

श्री जय किशोर
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी



सह संपादक

श्री सूरज कुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक



विशेष सहयोग

श्री शशि रंजन
सचिव, महानिदेशक लेखापरीक्षा



अनुक्रमणिका

क्रमांक	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	संदेश	महानिदेशक लेखापरीक्षा	1
2.	संदेश	उपनिदेशक	2
3.	संपादकीय	श्री दीपक कुमार दास , वरि. ले.प. अधिकारी/राजभाषा	3
4.	ये खेल नहीं जीवन गाथा है	श्री विभास चंद्र , सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	4
5.	समस्या	श्री दीपक कुमार दास , वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी	5
6.	ख्वाईश	श्री चंदन कुमार, लेखा परीक्षक , खोरदा	6
7.	रहस्यमय पहाड़	श्री पुरुषोत्तम किशोर	7-8
8.	सत्ता व्यवस्था	श्री हरि मोहन कुमार , लेखा परीक्षक	9
9.	कोरोना के इस डगर पे	श्री सौरभ दास , सहायक पर्यवेक्षक	10
10.	आज मैं ऊपर...आसमां नीचे	श्रीमति रोमा कुमारी	11-12
11.	बहने दो सरस्वती की धारा	श्रीमति दिव्या अंजेलिका खेस	13
12.	जीत पक्की है	श्रीमति सुचित्रा कर्मकार	14
13.	चाँदनी रात में	श्रीमति अनिता हालदार	14
14.	हमारे जीवन में रिश्ते का महत्त्व	श्रीमति भबानी मुर्मू	15
15.	सुशांत सिंह केस और मीडिया ट्रायल	श्रीमति नीतु चंद्रा	16
16.	संत कबीर के प्रेरणादायक दोहे	श्री राजेश कुमार पटेल, वरि. लेखा परीक्षक	17-18
17.	बिटिया	श्रीमति सुष्मिता कुमारी	19
18.	कोरोना काल में निर्वाचन	श्री सूरज कुमार , कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	20-21
19.	आज अतीत में जीना	सुश्री प्रेरणा किशोर	22
20.	उन दिनों में डायरी के एक पन्ने से	श्री गोबिंद दीप , सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	23
21.	एकता में बल है	सुश्री सागरिका साहू	23
22.	राजकुमार और परी	सुश्री स्वागातिका साहू	24
23.	जिंदगी में रिश्तों का स्वाद	सुश्री बी. श्यामला	24
24.	सर्दियों की सुबह	श्री मिंटू हालदार , लेखा परीक्षक	25
25.	नारी	सुश्री स्वास्तिक सारंगी	26
26.	जय भारत	सुश्री स्नेहा राउत	26
27.	ठहाके	श्री बी. रामचंद्र राव , वरि. लेखा परीक्षक	26
28.	जिज्ञासा	श्री निरंजन परिडा , सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	27
29.	कोरोना वायरस: लॉकडाउन एवं प्रदूषण	श्री निरुपम कर्मकार , लेखा परीक्षक	28-29
30.	बढ़ता चल	श्री प्रभात रंजन , वरि. लेखा परीक्षक	29
31.	बुराई जड़ से खत्म करो	श्री अजय कुमार सारंगी , एम. टी. एस.	30
32.	नथनी	सुश्री सुभस्मिता नायक	30
33.	माँ के नाम	श्री बिमल टोपनो , वरि. लेखा परीक्षक	31
34.	जिंदगी	श्री आलोक सरकार , वरि. लेखा परीक्षक	31
35.	गुरु कृपा ही केवलम	श्री सिंगराई मुर्मू , आशुलिपिक	32
36.	चिल्का झील	श्रीमति भानुमती किसान ,वरि. लेखा परीक्षक	33-34
37.	नालंदा विश्वविद्यालय	श्री राजु कुमार , आकड़ा प्रविष्टि प्रचालक	35-37
38.	बिहार विधान सभा चुनाव 2020	श्री विक्रांत आनंद , सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी	38
39.	तस्मानिया यात्रा	सुश्री स्वाति महापात्रा	39
39.	हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु सुझाव	राजभाषा अनुभाग	40
39.	हिंदी पखवाडा 2019 रिपोर्ट	राजभाषा अनुभाग	41-42
39.	आपके पत्र	राजभाषा अनुभाग	43-44

रचना का उत्तरदायित्व रचनाकारों का है , संपादक समिति का नहीं।

बिभुदत्त बसंतिया
भा.लेप. एवं ले.से.

सत्यमेव जयते

महानिदेशक लेखापरीक्षा
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर



संदेश

राजभाषा हिंदी को समर्पित हमारी पत्रिका "धर्मपद" का नौवां अंक प्रकाशित करना अत्यंत गौरव का विषय है । यह पत्रिका हिंदी भाषा के महत्व को दर्शाती है । हिंदी एक समृद्ध भाषा है और भारतीय राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता की कड़ी है । हिंदी राजभाषा के साथ-साथ विज्ञान की भाषा भी बनती जा रही है क्योंकि अब इस भाषा ने संचार एवं व्यापार के लिये भी अपने आपको तैयार कर लिया है । "धर्मपद" पत्रिका का अनवरत प्रकाशन इस बात को दर्शाता है कि इस कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी में कार्य करने में रूचि रखते हैं एवं हिंदी को प्राथमिकता प्रदान करते हैं। यह कार्य किसी भी कार्यालय के लिए एक संयुक्त प्रयास होता है, जिसमें कार्यालय के समस्त अनुभागों का पूर्ण योगदान रहता है ।

अतः इस अंक के प्रकाशन एवं श्रेष्ठ संपादन के लिए पत्रिका के संपादक एवं उससे जुड़े हुए समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनायें।

दुसासन बेहेरा
भा.लेप. एवं ले.से

उपनिदेशक
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर



संदेश

इस कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'धर्मपद' के नौवें अंक के प्रकाशन पर उत्साहित हूँ तथा कार्यालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किए जा रहे प्रयासों से मैं अभिभूत हूँ।

पत्रिकाएं समाज की घटनाओं या परिवेश का सचित्र वर्णन करती है तथा कला एवं संस्कृति का संवाहक भी होती है। ज्ञान एवं अनुभव के संचरण में भी पत्रिका की भूमिका अहम होती है और इनमें प्रयोग की जाने वाली भाषा यदि सर्वसाधारण की भाषा हो तो पत्रिका चिरकाल तक सजीव बनी रहती है।

अतः इन्ही आशा एवं विश्वास के साथ पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाओं सहित संपादक मंडल को बधाई देता हूँ।

दु. बेहेरा

संपादकीय



दीपक कुमार दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा

पत्रिकाएं समाज की घटनाओं या परिवेश का सचित्र वर्णन करती है तथा कला एवं संस्कृति का संवाहक भी होती हैं। पत्रिका के माध्यम से ज्ञान एवं अनुभव के संचरण में भाषा की भूमिका अहम होती है और यदि भाषा सर्वसाधारण की भाषा हो तो पत्रिका चिरकाल तक सजीव बनी रहती है।

आमतौर पर भावों की अभिव्यक्ति सामान्य बोली के माध्यम से की जाती है, बोली का दायरा बढ़ने पर यह क्षेत्रीय बोली में, क्षेत्रीय बोली विकसित होकर संपर्क भाषा का दर्जा प्राप्त कर लेती है, संपर्क भाषा का उन्नत रूप राजभाषा हैं तथा राजभाषा का राष्ट्रव्यापी, सर्वग्राह्य रुप राष्ट्रभाषा कहलाता है। संघ की राजभाषा हिन्दी परिष्कृत तथा राष्ट्रभाषा के पैमाने पर खरी उतरने वाली भाषा हैं। इस हेतु गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अनेक प्रयास किये जा रहे है।

इन्ही प्रयासों को मूर्त रुप देने के लिए इस कार्यालय द्वारा प्रतिवर्ष हिन्दी पत्रिका धर्मपद का प्रकाशन किया जाता है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि इस कार्यालय की नयी पहचान साबित हुई हैं। विभिन्न कार्यालयों से भी जो पत्रिकाएं प्राप्त होती है उनके पठन से यह सिद्ध होती है कि हिन्दी सभी क्षेत्रों में व्यापक रुप से प्रयोग की जाने वाली भाषा है।

अतः इसी आशा के साथ "धर्मपद" के नौवें अंक की प्रति आपको सहर्ष प्रस्तुत है। साथ ही पूर्व अंक के लिए भेजे गए आपके प्रशंसा एवं सुझाव हेतु विनम्रता पूर्वक धन्यवाद ज्ञापित करते है।



ये खेल नहीं जीवन गाथा है



भारत-ऑस्ट्रेलिया टेस्ट सीरीज जो खेला गया वह वास्तव में सिर्फ मैच भर बनकर नहीं रहा बल्कि जीवन-गाथा बन गया। दिसंबर 17-21 तक जो पहला मैच एडिलेड में खेला गया, उस मैच में भारत 3 दिनों तक हावी रहा और फिर चौथे दिन 1 घंटे में ऑस्ट्रेलिया की विश्वस्तरीय गेंदबाजी के सामने सब कुछ बिखर गया। भारतीय टीम अपने टेस्ट कैरियर के न्यूनतम स्कोर 36 पर आउट हो गया और 8 विकेट से यह मैच हार गया। भारतीय टीम का सबसे अच्छा बल्लेबाज विराट कोहली पितृत्व अवकाश पर भारत लौट गये और बेहतरीन गेंदबाज मोहम्मद सामी घायल होने के कारण टीम से बाहर हो गए। ऐसे में टीम की जिम्मेदारी उप-कप्तान अजिंक्या रहाने के कंधों पर आ गयी। मेलबर्न टेस्ट में अजिंक्या रहाने ने साहसिक पारी खेलते हुए शतक बनाया और भारतीय टीम यह मैच 8 विकेट से जीत गयी। मैच में उमेश यादव के घायल होने से एक और बेहतरीन तेज गेंदबाज टीम से बाहर हो गया। मैच का तीसरा टेस्ट सबसे निर्णायक रहा और उस मैच में भारतीय टीम ने पूरी ताकत झोंक दी भारतीय टीम ने रंग-भेदी टिप्पणी, ऑस्ट्रेलियन तेज गेंदबाजों का बाउंसर और शरीर पर आक्रमण तथा दर्शकों का रूखा व्यवहार सब झेला लेकिन हनुमा विहारी एवं आर अश्विन घायल होने के बावजूद जो कर्मठता, साहस एवं जुझारूपण दिखाया उसे वर्षों तक याद रखा जाएगा और ना सिर्फ खिलाड़ियों को बल्कि अन्य क्षेत्रों के लोगों को भी प्रेरणा देता रहेगा। चौथे टेस्ट में सिर्फ तीन अनुभवी खिलाड़ी थे और वे सभी बल्लेबाज थे जबकि सारे गेंदबाज अनुभवहीन थे और कई तो टेस्ट जीवन का आगाज ही कर रहे थे और वह भी ब्रिसबेन में जहां पिछले 32 सालों से ऑस्ट्रेलियाई टीम हारी नहीं थी। भारतीय टीम एक बार फिर लड़खड़ाई लेकिन डब्लू सुंदर एवं शार्दुल ठाकुर ने पहली इनिंग में उन्हें संभाला और दबाव को काफी कम कर दिया। नए गेंदबाजों ने हौसला दिखाया और ऑस्ट्रेलियाई टीम को बड़े स्कोर बनाने से रोका फिर भी भारत को चौथी पारी में 300 से ज्यादा स्कोर बनाने का लक्ष्य मिला जो नामुमकिन था लेकिन, गिल , पुजारा और पंत ने वह कर दिखाया जो सपने जैसा था और पहली बार किसी एशियाई टीम ने ब्रिसबेन में आस्ट्रेलिया को हरा दिया और साथ ही एक गाथा भी लिख दिया जिस पर बहुत सारी किताबें लिखी जाएगीं डाक्यूमेंट्री बनाई जाएगीं। इस मैच से हमे जो शिक्षा मिली वह यह की हमें उम्मीद कभी नहीं हारनी चाहिए । अपने ऊपर हमेशा विश्वास करना चाहिए, एकजुट बने रहना चाहिए, स्थितियां चाहें जितनी विपरीत हों हौसला और सकरात्मकता बनाये रखना चाहिए। यह विश्वास रखना चाहिए की असंभव कुछ भी नहीं है, अगर मन में विश्वास है।

विभास चन्द्र,
सहा. लेखा परीक्षा अधिकारी



समस्या

समस्या एक ऐसा शब्द है जिससे सभी को डर लगता है लेकिन सबके साथ है। आदमी चाहे जितनी भी कोशिश कर ले लेकिन समस्या कभी किसी का पीछा नहीं छोड़ता । एक साधारण आदमी से लेकर बड़े बड़े पूंजीपति अमीर आदमी क्यों न हो समस्या सभी के साथ है भले ही हमें दूसरों की समस्या दिखता ना हो लेकिन रहता सबके साथ।

कभी-कभी हम सोचते हैं कि हमारी समस्या सबसे अधिक है लेकिन उसी समय यदि हम शांत मन से अपने आस-पड़ोस के बारे में सोचते हैं तो पाते हैं कि बाकी लोगों की समस्या भी हम से कम नहीं है। किसी के साथ स्वास्थ्य की समस्या, किसी को रोजगार की समस्या, किसी के साथ बच्चों की समस्या ,इत्यादि। कोई भी आदमी इस संसार में समस्या से अछूता नहीं है।

अगर मैं अपने आप के बारे में सोचता हूँ तो पाता हूँ कि कैसे हमारे जीवन में समस्या की शुरुआत होती है। जन्म के प्रथम 5 वर्षों में जीवन में कोई समस्या नहीं होती । जब मैं स्कूल जाना प्रारंभ किया तो जीवन में समस्या की शुरुआत होने लगी। अच्छे से पढ़ाई लिखाई करने की समस्या। पढ़ाई कर ली तो रोजगार की समस्या। रोजगार पा ली तो रोजगार में आगे बढ़ने की समस्या, परिवार की समस्या, स्वास्थ्य की समस्या, बच्चों की समस्या, इत्यादि।

वास्तव में हमारा जीवन एक अंग्रेजी का अक्षर  की तरह है। जन्म के समय जीवन में कोई समस्या नहीं होती। ज्यों-ज्यों हम बड़े होते जाते हैं जीवन में समस्या भी बड़ा होने लगता है। अच्छी तरह पढ़ाई करने की समस्या, रोजगार पाने की समस्या। हाँ हमें जब रोजगार मिल जाता है तो उस समय लगता है कि समस्या अब थोड़ा सा कम हो गया है। फिर परिवार होता है, उसका भरण पोषण, बच्चों की पढ़ाई, उसका रोजगार, समस्या पुनः बढ़ने लगता है। एक दिन ऐसा आता है जब बच्चों की पढ़ाई लिखाई समाप्त हो जाती है उसे रोजगार मिल जाता है, उसका परिवार सुरक्षित हो जाता है, तब लगता है कि समस्या धीरे-धीरे कम होने लगी है। और इस तरह एक दिन ऐसा होता है कि सभी समस्यायें समाप्त हो जाती हैं और जीवन लीला समाप्त हो जाती है। यही जिंदगी है और यही जिंदगी का परम सत्य है।

दीपक कुमार दास

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/ राजभाषा

ख्वाईश



ख्वाईश एक ऐसा शब्द है जो दिखता तो बहुत छोटा है परंतु सारी जिंदगी कम पड़ जाती है इसे पूरा करने में। बचपन में बड़े होने की ख्वाईश बड़े होकर कुछ बनने की ख्वाईश, कुछ पाने की ख्वाईश ऐसे अनगिनत ख्वाईशें होती हैं सभी के दिलों में।

जैसे हर मनुष्य की सोच अलग-अलग होती है उसी प्रकार उनकी ख्वाईशें भी एक दूसरे से भिन्न-भिन्न होती है ,और इन्हीं ख्वाईशों को पूरा करने के लिए हम अपने घर-परिवार को छोड़कर दूर चले जाते हैं।



पर यकीन मानिए ख्वाईशों का सिलसिला कभी खत्म नहीं होता, जब हमारी एक ख्वाईश पूरी होती है तो तुरंत दूसरी ख्वाईश हमारे सामने खड़ी हो जाती है, और उसे पूरा करने के लिए हम अपनी पूरी ताकत लगा देते हैं । ऐसे ही एक के बाद एक ख्वाईश आती रहती है और मनुष्य इसको पूरा करने में पूरी जिंदगी बिता देता है
सच तो यह है कि मनुष्य की पूरी जिंदगी खत्म हो जाती है पर ख्वाईशें नहीं ।

जिस दिन मनुष्य को ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी सारी ख्वाहिशें पूरी हो गई हैं, उसी पल उसे मोक्ष प्राप्ति हो जाती है और वह सारे बंधन से मुक्त हो जाता है । उसे मोह-माया रुपी संसार से मुक्ति मिल जाती है ।

धन्यवाद!

चंदन कुमार
लेखापरीक्षक, खुरदा रोड

रहस्मय पहाड़

एक समय की बात है कुछ खोजकर्ता अलग-अलग जंगलों में जाकर पेड़-पौधे के बारे में जानकारी इकट्ठा कर रहे थे। एक दिन उन्हें काम करते-करते देर हो गई थी और शाम भी हो गई थी। तो वह सब जंगल के पास वाले ही एक होटल में चले गए। वहां उन्होंने सिर्फ दो-तीन वेटर को ही देखा एक खोजकर्ता ने मैनेजर से इसके बारे में पूछ लिया तो मैनेजर ने बताया कि बरसाती मौसम में यहां कम लोग आते हैं, इसलिए हम भी अपने वेटर को छुट्टी पर भेज देते हैं, अगर आपको कोई शंका है तो आप इंटरनेट पर हमारे होटल को सर्च कर सकते हैं, तब वह खोजकर्ता बोलता है कि नहीं इसकी कोई जरूरत नहीं है और वह सब अपने-अपने कमरों में चले जाते हैं।



रात को टहलने और गर्मी का आनंद लेने के लिए वह सब अपने कमरों से बाहर आते हैं और आग के पास बैठकर बात करने लगते हैं। एक बूढ़ा वेटर वहीं से जा रहा था तो उसने उनसे बात करने का सोचा और उन लोगों से बात करने लगा। बातें कुछ देर चली , इतने में एक खोजकर्ता ने जंगल के पास वाले पहाड़ के बारे में पूछ लिया।

यह पूछते ही उस बूढ़े वेटर के चेहरे के सारे हाव-भाव बदल गए और उसने बताया कि साहब आप इस जगह पर कहीं पर भी चले जाएं लेकिन कभी भी उस पहाड़ पर नहीं जाना, वहां एक डायन का निवास है। इस बात पर सभी खोजकर्ता हँस पड़े। तो बूढा वेटर बोलता है; आप शहरी लोगों को यह सब झूठ लगता है, मगर उस पहाड़ी पर जो कोई भी गया, वो कभी वापस नहीं आया।

फिर उसने उस पहाड़ की कहानी बताई। कई साल पहले यह जंगल गाँव हुआ करता था और वहां कई सारे लोग भी रहते थे। सब खुशी से रह रहे थे। तभी अचानक से उस गांव में से जवान लड़कियाँ गायब होने लगी, लोग बहुत डर गए और उन्होंने सरपंच के पास जाना तय किया।

जब गांव में इन सब के ऊपर बात चल रही थी, तो लोगों का शक उस पहाड़ वाली डायन के ऊपर हुआ। किसी ने बताया कि वह बहुत खतरनाक है और बदसूरत दिखती है, उसके चेहरे पर झुर्रियाँ है, उसकी बड़ी लाल आँखें है , बूढी है और झुक कर चलती है, इत्यादि।

तो सरपंच ने फैसला किया कि उस पहाड़ पर जाकर उस डायन से सब मिलकर बात करेंगे और अगले दिन पूरा गांव पहाड़ की ओर निकल पड़ा ।कहीं ना कहीं लोग उससे डरते भी थे। इसलिए उसे चेतावनी देकर वह सब गांव वापस आ गए।

कुछ समय तक गांव में कुछ नहीं हुआ और सब खुशी से रहने लगे । गाँव वालों को लगा की उनकी धमकी का असर हुआ है। गाँव में एक बात फैल गई कि डायन के बाएं पैर का अंगूठा नहीं है, मगर लोगों ने इसे भी ऐसे ही सुन के उड़ा दिया। एक दिन फिर गांव से एक लड़की गायब हुई और जब लोगों का ध्यान पैरों के निशान पर गया तो उन्होंने देखा कि बाएं पैर के निशान में अंगूठा नहीं था। सभी बहुत गुस्सा हो गए और पहाड़ की तरफ चल पड़े, और डायन को वहां एक पेड़ से लटका कर जला के मार दिया । मरते-मरते डायन यह बोली की वापस आऊँगी और बदला लूँगी। कुछ समय बाद पूरा गांव भी किसी कारण खाली हो गया और बूढ़े वेटर ने बताया कि वह डायन अपने उम्र को कम करने के लिए उन लड़कियों को ले जाया करती थी और उसे जो चीज पसंद आ जाए वह उसे भी ले जाती थी। ऐसा कहते हुए वह वेटर चला गया। खोजकर्ताओं ने भी उसकी बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया और अगले दिन उसी पहाड़ पर खोज करने चले गए। सब ठीक ठाक चल रहा था।

उन खोजकर्ताओं में एक की शादी हो चुकी थी और वह अपनी बीवी के साथ आया था। सब थके हुए थे। जिसकी शादी हो चुकी थी, उसे रात में बिछावन के बगल से गिनती की आवाज सुनाई देती है। एक दो तीन चार .....लेकिन वह नींद में था और उसे लगा कि उसकी बीवी पैसों की गिनती कर रही है तो उसे सोने बोलता है और खुद भी सो जाता है । आधी रात उसकी नींद फिर खुलती है और वह सुनता है कि गिनती बहुत आगे बढ़ गई है, 32614-32615-32616.... आदि।

तब जब वह उठता है तो देखता है, उसकी बीवी उसके बगल में नहीं है और वह आवाज भी एक कोने से आ रही है। जब तक उसकी आँखे पूरी तरह खुलती है वह उस डायन को अपने कमरे में देख कर डर जाता है और बेहोश हो जाता है सुबह उसकी जब आखें खुलती है तो सबसे पहले अपनी बीवी को ढूंढता है और देखता है उस कोने में भीड़ लगी है, जब वो वहां जा कर देखता है तो उसकी बीवी की लाश पड़ी होती है। और उसके सर पर बाल नहीं होते हैं, तब वह बूढा वेटर उसे बताता है मना करने के बाद भी वे लोग उस पहाड़ पर गए और वहाँ उस डायन को आपकी बीबी की काली, लंबी, सुनहरी बाल पसंद आ गई होगी। उसके बाल काटे नहीं गए थे उखाड़े गए थे और उसे उसी की गिनती सुनाई दे रही थी।

पुरुषोत्तम किशोर
पिता:- जे.किशोर
सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा

सत्ता – व्यवस्था



सत्ता और व्यवस्था देश के दो आयाम है जो सामान्य जन मानस की सेवा से जुड़े हैं| इसमें अंतर है जो कभी कभी हमें एक सा लगता है| बदलाव प्रकृति का नियम है, हम भी समय अनुसार अपने आप को बदल रहे हैं| सत्ता और व्यवस्था में भी समयानुसार बदलाव की जरुरत है और इस बदलाव के लिए हमें जागरूक होने की आवश्यकता है| यदि कोई सत्ता हमारे सामाजिक सपने के अनुसार या भ्रष्टाचार मुक्त या एक निश्चित रूप रेखा से विचलित होती है तो हम उसे अगले पांच वर्ष के लिए चयनित नहीं करते हैं या उनके कार्य प्रणाली में बदलाव की अपेक्षा करते हैं | परन्तु जिस व्यवस्था पर सत्ता अपने विचार को या अपने नीति को कार्यान्वित करती है उसके वदलाव पर हमारी दबाव उतनी नहीं रहती है, हम अपनी जिम्मेदारियों को उस समय दर किनार कर देते हैं क्योंकि या तो हमें उसकी समझ नहीं होती या अगर होती भी है तो उसे एक संगठित तौर पर पेश करनी नहीं आती | परिणामस्वरूप हम सत्ता पर व्यवस्थीय सुधार के लिए दबाव नहीं बना पाते और सत्ता पे आसीत, व्यवस्थीय ढाचें में थोड़ी उलट-पलट करके हमें दिखा देते हैं कि हम अपने पूरे सामर्थ से बदलाव की कोशिश कर रहे हैं | परन्तु स्थिति यथावत अपनी जगह पर बनी रहती है| और अहम बात है जाने अनजाने हम भी सिर्फ सत्ता परिवर्तन को ही अपनी जिम्मेदारी मानते हैं और बाकी उनके भरोसे छोड़ देते हैं| चाहे जितना कोस लें, लेकिन जिस दिन हम जागरूक हो जायेंगे, बदल जायेंगे व्स्वस्था में भी धीरे धीरे सुधार आ जायेगा और सुधार निरंतर हो भी रही है| सत्ता तो बस जनता के इशारे का प्यादा है बसर्ते हमें जागरूक होने की जरुरत है और सही मुद्दे पर एकजुट होकर, जागरूक होकर, संवाद स्थापित करकर परिवर्तन के लिए प्रयतनशील होना पड़ेगा |

हरि मोहन कुमार
लेखा परीक्षक

कोरोना के इस डगर पे



कोरोना के इस डगर पे
चलना संभल-संभल के
ये दायित्व है हमारा
भविष्य हम ही हैं कल के।

आपस में दो गज की दूरी रखना
मुँह पे मास्क लगाना
हाथ सदा साबुन से धोना
और सेनेटाइजर है तुमको लगाना

कोरोना के इस डगर पे....



बाहर तभी निकलना
जब जरूरी काम है करना
सेनेटाइजर सदा पास रखना
फेस कवर है तुमको लगाना

कोरोना के इस डगर पे....

जब भी किसी से मिलना
दूर खड़े तुम रहना
हाथ मत मिलाना
सबको नमस्ते कहना

कोरोना के इस डगर पे....

बाजार जब भी जाना
भीड़ से है तुमको बचना
जब भी हो मूल्य चुकाना
भुगतान इलेक्ट्रॉनिक करना

कोरोना के इस डगर पे....

जो भी सामान है लाना
ऑनलाइन तुम मंगवाना
जब समान घर आ जाए
सैनेटाइज कर उसे तुम रखना

कोरोना के इस डगर पे...
जब भी कहीं हो जाना
मोबाईल को भूल मत जाना
आरोग्य सेतु एप इंस्टॉल करना
ब्लूटूथ और लोकेशन सदा ऑन रखना

कोरोना के इस डगर पे....

कार्यालय में जब भी रहना
सामाजिक दूरी कायम रखना
ईमेल का उपयोग करना
सभा का वर्जन करना

कोरोना के इस डगर पे....

अगर खुद को है बचाना
तो नियम का पालन करना
वरना अंतिम समय में भी
आपके प्रिय-जन को न है आना

कोरोना के इस डगर पे....
चलना संभल-संभल के
ये दायित्व है हमारा
भविष्य हम ही हैं कल के।

सौरभ दास
सहायक पर्यवेक्षक

आज मैं ऊपर ...आसमां नीचे



बात पिछले साल जनवरी माह की है । मेरे पति दूर शहर में पदस्थापित थे । मैं अपने घर पर थी ।मेरे पति की अचानक तबीयत खराब हो गई ,अतः मुझे उनके पास जाना था । जब ट्रेन में टिकट चेक की गई तो कोई भी बर्थ खाली नहीं था। सभी ट्रेन में वेटिंग लिस्ट चल रही थी। मुझे उनके पास तुरंत उनकी देखभाल के लिए जाना था, परंतु रेलगाड़ी में कोई सीट खाली नहीं थी एवं जाने में काफी समय भी लग रहा था। अंततः वहां जाने के लिए हवाई यात्रा का माध्यम चुना गया। अब एक और समस्या आई कि मुझे पहुंचाने मेरे साथ वहां और कौन जाएगा। तब परिवार में निर्णय लिया गया कि मेरे साथ मेरी ननद नेहा जी भी जाएगी। नेहा जी बहुत समझदार एवं साहसी लड़की हैं ,साथ ही वह मुझे बहुत मानती एवं प्यार भी करती हैं। उन्हें बाहर अकेले आने-जाने का एवं रहने का अभ्यास था।

जब मुझे यह खबर मिली कि मुझे अपने पति के पास हवाई जहाज से जाना है तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा । मैं मन ही मन ये सोच कर प्रफुल्लित हो रही थी कि मैं अपने परिवार की पहली सदस्य होउंगी जो हवाई जहाज में यात्रा करेगी। तुरंत मेरे पति ने मेरे और मेरे ननद के लिए हवाई जहाज में टिकट बुक कर मुझे भेज दिया। जब मैंने टिकट देखा तो पाया कि हमारा टिकट स्पाईस जेट एयरलाइंस में था और हमारी फ्लाइट अगले दिन की थी। सारा प्लान इतना जल्दी बन गया कि मुझे हड़बड़ी में अपना सामान पैक करना पड़ा। हमारे घर से हवाई जहाज से यात्रा करने के लिए पहले ट्रेन से पटना जाना पड़ता है। पटना जाने के लिए ट्रेन बिल्कुल सुबह-सुबह थी। इसलिए रात को मैं सुबह का अलार्म लगा कर जल्दी सो गई। पति की तबियत और जाने की बेचैनी के कारण मुझे रात में ठीक से नींद नहीं आई। फिर भी मैं सुबह 4:00 बजे जाग गई। जल्दी से नहा धोकर तैयार हो गई। रेलगाड़ी के आगमन से आधे घंटे पहले मेरे ससुर जी ने मुझे और मेरी ननद को रेलवे स्टेशन पहुंचा दिया। चूंकि यह मेरी पहली हवाई यात्रा थी अतः परिवार वाले के तरफ से काफी हिदायतें भी मिलीं। ससुराल वाले मेरा बहुत खयाल रखतें हैं। रास्ते के लिए मेरे ससुर जी ने स्नैक्स और पानी का बोतल भी दे दी ताकि हमें यात्रा के दौरान दूसरे से खरीदना न पड़े जिससे अप्रिय घटना से बचा जा सके।

ट्रेन अपने निर्धारित समय पर आ गई और हमलोग उस ट्रेन से पटना पहुँच गए। वहां उतर कर पटना रेलवे स्टेशन स्थित महावीर मंदिर में जाकर हमने बजरंगबली जी का दर्शन किया और प्रसाद चढ़ाया। पटना रेलवे स्टेशन से एयरपोर्ट जाने के लिए कैब या ऑटो करना पड़ता है। हमने पटना के जयप्रकाश नारायण इंटरनेशनल एयरपोर्ट जाने के लिए अपने मोबाइल से कैब बुक की। कैब वाले ने हमें एयरपोर्ट छोड़ दिया।

हम लोग समय से बहुत पहले ही हवाई अड्डा पहुंच चुके थे इसलिए वहां घूमने का भी काफी समय मिला।पटना एयरपोर्ट बहुत छोटा सा एयरपोर्ट था। गेट पर सी.आई.एस.एफ. के जवान ने हम लोगों का टिकट चेक किया फिर अंदर जाने दिया। यहां हर एक एयरलाईन का अलग-अलग काउंटर था। मैं पहली बार एयरपोर्ट आई थी इसलिए मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। हमलोग सबसे पहले स्पाईस जेट एयरलाइंस के काउंटर पर गए। उन्हें अपना टिकट दिखाया । तो उन्होंने बताया कि सबसे पहले आपको बोर्डिंग पास बनाना पड़ेगा। अचानक मेरे मन में सवाल उठा कि हम लोगों ने टिकट पहले से ले लिया है तो बोर्डिंग पास बनाने की क्या जरूरत है?

फिर उन्होंने समझाया कि "बोर्डिंग पास बनने के बाद उसमें सीट नंबर दी जाती है जिस सीट पर बैठकर आप यात्रा करेंगे"। उन्होंने सबसे पहले हमारे सामान का वजन किया। फिर बड़े ट्रॉली बैग को वजन करके अपने पास रख लिया और बताया कि यह आपको हवाई जहाज से उतरने के बाद गंतव्य एयरपोर्ट पर दिया जाएगा। मेरी ननद ने वहां बैठे बुकिंग एग्जीक्यूटिव को अपनी पहली हवाई यात्रा के बारे में बताया और खिड़की वाली सीट देने का अनुरोध किया ।बुकिंग एग्जीक्यूटिव एक लड़की थी वह हमारी मनोभावना को समझ चुकी थी। उन्होंने मुस्कुराते हुए हमें खिड़की वाली सीट दे दी।

हमलोग खिड़की वाली सीट पाकर बहुत खुश हुए। वहां हम लोग एक स्नैक्स काउंटर पड़ गए। स्नैक्स काउंटर पर जब हमने वहां उपलब्ध सामानों का दाम देखा तो बहुत आश्चर्य हुआ। एयरपोर्ट पर खाने का सामान का दाम खुले बाजार की अपेक्षा बहुत ज्यादा था। फिर हवाई जहाज पर चढ़ने के लिए बोर्डिंग अनाउंसमेंट हुई । फिर हम लोगों ने सुरक्षा जांच करवाया। सुरक्षा जांच करवाने के दौरान हमने अपनी सारी छोटी चीजें जैसे-मोबाइल,छोटा पर्स सभी को अपने हैंडबैग में डालकर स्कैन के लिए दे दिया। उसके बाद हम लोग हवाई जहाज पर चढ़ने के लिए संबंधित गेट के पास पहुंच गए। गेट पर पुनः एक बार बोर्डिंग पास की जांच हुई फिर हमने देखा कि हवाई जहाज कुछ दूरी पर खड़ा था। जीवन में पहली बार हवाई जहाज देखा था, जिसका आकार बहुत बड़ा था। आसमान में तो यह बिल्कुल छोटा दिखाई पड़ता है पर हकीकत में बहुत बड़ा दिखाई पड़ रहा था , बिल्कुल एक वोल्वो बस की तरह । हवाई जहाज पर चढ़ने के लिए सीढ़ियां लगी हुई थी।

हवाई जहाज में प्रवेश करते ही एयर होस्टेस ने हम लोगों को नमस्कार कर मुस्कुराते हुए हमारा स्वागत किया और सीट खोजने में हमारी मदद की। हमने अपना हैंडबैग अपने सीट के ऊपर बने जगह में रख दिया और अपनी सीट पर बैठ गई। हमारी सीट बिल्कुल विंग के पास था। हवाई जहाज चलने से पहले एयर होस्टेस ने घोषणा की कि सभी लोग अपने-अपने सीट बेल्ट बांध ले, फिर उसने आपातकाल से निपटने के लिए जरूरी निर्देश दिए गए। इसके बाद प्लेन रनवे पर बहुत तेज रफ्तार से दौड़ने लगी और आसमान की ओर उड़ चली।

जब प्लेन जमीन से अचानक ऊपर उठा तो बहुत डर लगा। पर जैसे-जैसे प्लेन आसमान को छूने लगा वैसे वैसे डर खत्म हो गया। मेरे मोबाईल के सभी सिग्नल गायब हो चुके थे।अब हवाई जहाज बादल के ऊपर उड़ रहा था। बाहर का दृश्य देखकर मुझे हिंदी फिल्म का गाना याद आ गया, आज मैं ऊपर..... आसमां नीचे.....। नजारा इतना सुंदर लग रहा था मानो जैसे कि मैं स्वर्ग में हूँ। नीला आसमान.....चारों तरफ बादल..... और बीच में मैं।मैने अपने मोबाईल से बाहर की तसवीरें भी ली।थोड़ी देर बाद एयर होस्टेस स्नैक्स और चाय ले कर आई। आसमान में उड़ते हुए स्नैक्स और चाय का मजा ही कुछ और था। हमलोग चाय की चुस्कियों के साथ बाहर के दृश्य का आनंद ले रहे थे। करीब दो घंटे के बाद एक अनाउंसमेंट हुई कि प्लेन अब गंतव्य पर पहुँचने वाली है कृपया अपनी-अपनी कुर्सी की पेटी बाँध लें। प्लेन जब लैंड कर रही थी तो मुझे गुदगुदी लग रही थी। प्लेन के लैंड होने के बाद उद्घोषणा हुई कि अपना समान बेल्ट न. 7 से प्रप्त कर सकते हैं। मैं समझ गई कि हमारा समान जो बोर्डिंग पास बनाते वक्त जमा ले लिया गया था वही सामान हमें यहाँ वापस मिलेगा। हमलोग सम्बंधित बेल्ट से सामान लेकर एयरपोर्ट से बाहर निकल गए और फिर कैब से अपने पति के पास पहुँच गई । इस तरह मेरी पहली हवाई यात्रा बहुत ही रोमांचक और यादगार रही।

रोमा कुमारी
पति-श्री सूरज कुमार, क. हिंदी अनुवादक

बहने दो सरस्वती की धारा

बहने दो मुझमें सरस्वती की धारा
मत रोको मुझे जाने दो
मैं पढ़ना चाहती हूँ
मैं बढ़ना चाहती हूँ
मैं जकड़ी जंजीरों को तोड़ना चाहती हूँ।

मत उड़ाओ इन पुलों को
क्योंकि उस पार मेरा विद्यालय है
नदी भरी है उफनाई है
बह जाउंगी मैं उसमें
बह जाएगी सरस्वती हमारी।

मत दो हथियार मुझे
मेरे कंधे इस लायक नहीं
मैं तो कलम उठाना चाहती हूँ
इन हथियारों का बोझ मैं नहीं उठा सकती
हम भी तेरे बच्चे हैं ये सोचो जरा
बहने दो मुझमें सरस्वती की धारा।

मत उड़ाओ मेरे विद्यालय को
बाहर धुप है, पेंड़ों की छाँव नहीं
बाहर बर्षा है ,बचने की जगह नहीं
भींग जाएगी सरस्वती इसमें
टूट जायेंगे सपने सारे।



नक्सली का कलंक तुम सर से मिटा दो
देखों ये जीवन कितना सुंदर है
न दुःख दो न दुःख पाओ
हृदय कठोरता तुम त्याग दो
जीवन तुम्हारा सुंदर प्यारा
बहने दो सरस्वती की धारा।

दिव्या अंजेलिका खेस
पति- बिमल टोपनो,वरि. लेखा परीक्षक ,संबलपुर

जीत पक्की है

जीत पक्की है.....बस
कुछ करना है, तो डटकर चल,
थोड़ा दुनिया से हटकर चल।
लीक पर तो सभी चल लेते है,
कभी इतिहास को पलटकर चल।

बिना काम के मुकाम कैसा?
बिना मेहनत के,दाम कैसा।
जब तक ना हाँसिल हो मंज़िल,
तो राह में,राही आराम कैसा।

अर्जुन सा,निशाना रख, मन में,
ना कोई बहाना रख।
जो लक्ष्य सामने है,
बस उसी पे अपना ठिकाना रख।

सोच मत, साकार कर,
अपने कर्मो से प्यार कर।
मिलेंगा तेरी मेहनत का फल,
किसी और का ना इंतज़ार कर।

जो चले थे अकेले,
उनके पीछे आज मेले हैं।
जो करते रहे इंतज़ार उनकी,
जिंदगी में आज भी झमेले है।

सुचित्रा कर्मकार
पति-श्री निरुपम कर्मकार, लेखापरीक्षक

चाँदनी रात में

चाँदनी रात में...
हर किसी को नहीं आते
बेजान बारूद के कणों में
सोई आग के सपने नहीं आते
बदी के लिए उठी हुई
हथेली को पसीने नहीं आते
सेल्फ़ी में पड़े
इतिहास के ग्रंथो को सपने नहीं आते



सपनों के लिए लाज़मी है
झेलने वाले दिलों का होना
नींद की नज़र होनी लाज़मी है
इसलिए चाँदनी रात में
सपने हर किसी को नहीं आते।

अनिता हालदार
पति-श्री मिन्टू हालदार, लेखापरीक्षक

हमारे जीवन में रिश्ते का महत्व

हमारे जीवन में रिश्तों का होना बहुत जरूरी है। जन्म लेते ही हम रिश्तों की डोर में बंध जाते हैं। माँ-बाप, भाई-बहन, दादा-दादी, नाना-नानी, आदि जैसे अनेक रिश्तों में बंध जाते हैं। इन सब रिश्तों से परिवार का निर्माण होता है। कई परिवार से समाज और समाज से देश तक का रिश्ता जुड़ जाता है। क्योंकि अकेले इन्सान का जीवित रहना भी संभव नहीं है।

माँ-बाप ईश्वर का रूप :

जीवन का सफर माँ-बाप के आशीर्वाद के बिना संभव नहीं है। यह एक ऐसा रिश्ता है जो हमेशा आपके साथ रहता है। सुख-दुःख हर समय में आपका साथ देता है। कोई भी रिश्ता माँ-बाप से बड़ा नही होता। अगर धरती पर ईश्वर हैं तो वो माँ-बाप ही है। हमारे भारतीय संस्कृति में हमेशा माँ-बाप को ईश्वर का रूप माना जाता है। जो लोग उन्हें कष्ट देते हैं वो कभी भी सुखी नही रहते और जब कभी खुद कष्ट में होते हैं तब भी माँ-बाप ही सबसे आगे आते हैं उनकी मदद के लिए।

भाई-बहन का प्यारा रिश्ता :

भाई-बहन के रिश्तों को एक पवित्र रिश्ता माना जाता है। भाई-बहन के रिश्तों से, हिम्मत मिलती है कुछ करने की। भाई-बहन का त्यौहार रक्षा बंधन सभी धर्मों के लोग मनाते है। भाई अपने बहन की रक्षा का वायदा करता है। बहन को देखो घर में माँ के साथ काम करना, पिता जी का ध्यान रखना, भाई का ध्यान रखना साथ ही साथ खुद की शिक्षा का भी ध्यान रखती है। यह एक ऐसा रिश्ता है जिसमें माँ-बाप दादा-दादी, दोस्त आदि सब रिश्ते होते हैं।

पति-पत्नी के पवित्र रिश्ते की डोर :

पति-पत्नी का रिश्ता परिवार की मधुरता का आधार होता है। इसकी मधुरता और खटास दोनों का प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। कई बार आपसी रिश्ते जरा सी बात पर बिगड़ जातें है। इसकी वजह क्रोध है। पति-पत्नी के रिश्तों में क्रोध नहीं होना चाहिए। भारतीय संस्कृति में पति-पत्नी का रिश्ता सात जन्म का माना जाता है। यह तब ही संभव है जब रिश्तों में गलत फहमी न हो, दोनों में विश्वास का होना जरुरी है।

भबानी मुर्मू
पति –श्री सिंगराई मुर्मू, आशुलिपिक

सुशांत सिंह केस और मीडिया ट्रायल



सुशांत सिंह राजपूत, बॉलीवुड के उभरते हुए अभिनेता की मौत रहस्यमई ढंग से हो गई। इस केस की जांच तीन एजेंसियां कर रही थी, (1) सीबीआई (2) प्रवर्तन निदेशालय और (3) नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो। ये एजेंसियाँ कम नहीं थी कि एक और बहुत बड़ी एजेंसी इस गुत्थी को सुलझाने के लिए कूद पड़ी जिसका नाम है मीडिया। हर चैनल कूक से लेकर, ताले वाले, साफ सफाई करने वाले और पड़ोसी का इंटरव्यू लेने में लगे थे। हर चैनल पर एक एक्सपर्ट बैठा हुआ था जो हर रात 9:00 बजे किसी ना किसी को दोषी करार दे रहा था। परंतु सोचने वाली बात यह है कि किसी शख्स को गुनाहगार ठहराने का अधिकार किस संस्था के पास है। यह कहीं ना कहीं न्यायिक प्रक्रिया को भटकाने की साजिश लग रही थी, इससे भारतीय मीडिया की साख पर गंभीर प्रश्न लग गया।



आज मीडिया की विश्वसनीयता अपने न्यूनतम स्तर पर है। उस वक्त देश नाजूक दौर से गुजर रहा था। कोरोना महामारी, लॉकडाउन, सीमा पर चीन का अतिक्रमण, बढ़ती बेरोजगारी , मजदूरों का पलायन और अर्थव्यवस्था की नाजुक हालत देश के सामने सबसे बड़े ज्वलंत मुद्दे थे। परंतु मीडिया इन किसी भी मुद्दे पर सकारात्मक चर्चा करने के बजाय राजपूत केस में उलझी रही। यह भारतीय मीडिया का बचकानापन नहीं तो और क्या था। समय आ गया है कि निष्पक्ष पत्रकारिता को बढ़ावा दिया जाए ताकि भारत का लोकतंत्र मजबूत हो, वरना इस तरह की मीडिया देश और समाज को सिर्फ गुमराह करती रहेगी।

किसी भी शख्स का मीडिया ट्रायल करना, गुनहगार साबित होने से पहले ही लोगों की नजरों में उसकी छवि खराब कर देना घोर अन्याय है। हमारे देश में एक स्वतंत्र न्यायपालिका है, उस पर विश्वास करना चाहिए। हर एजेंसी को अपने दायरे में रहकर काम करना चाहिए। स्वतंत्रता के नाम पर मीडिया जो उछल-कूद मचाये हुए है वह बिल्कुल ही जायज नहीं है। आरुषि हत्याकांड, सुनंदा पुष्कर मौत,आदि का मामला इसका उदाहरण है। मीडिया को टीआरपी की होड़ में दौड़ना छोड़कर लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की अपनी भूमिका को असरदार रूप से निभाने की कोशिश करनी चाहिए।

नीतु चंद्रा
पतिः- विभास चंद्र
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संत कबीर के प्रेरणादायक दोहे



मन के हारे हार हैं, मन के जीते जीत।
कहै कबीर हरि पाइए, मन ही की परतीत॥

अर्थ: मन के हारने से हार होती है, मन के जीतने से जीत होती है (मनोबल सदैव ऊँचा रखना चाहिए)। मन के गहन विश्वास से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है।

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझकौं सौंपता, क्या लागै है मेरा॥

अर्थ: मेरे पास अपना कुछ भी नहीं है। मेरा यश, मेरी धन-संपत्ति, मेरी शारीरिक मानसिक शक्ति, सब कुछ तुम्हारी ही है। जब मेरा कुछ भी नहीं है तो उसके प्रति ममता कैसी? तेरी दी हुई वस्तुओं को तुम्हें समर्पित करते हुए मेरी क्या हानि है? इसमें मेरा अपना लगता ही क्या है?

साँच बराबरि तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है ताकै हृदय आप॥

अर्थ: सच्चाई के बराबर कोई तपस्या नहीं है, झूठ (मिथ्या आचरण) के बराबर कोई पाप कर्म नहीं है। जिसके हृदय में सच्चाई है उसी के हृदय में भगवान निवास करते हैं।

चाकी चलती देखि कै, दिया कबीरा रोइ।
दोइ पट भीतर आइकै, सालिम बचा न कोई॥

अर्थ: काल की चक्की चलते देख कर कबीर को रुलाई आ जाती है। आकाश और धरती के दो पाटों के बीच कोई भी सुरक्षित नहीं बचा है।

कबीर ऐसा यहु संसार है, जैसा सैंबल फूल।
दिन दस के व्यौहार में, झूठै रंगि न भूलि॥

अर्थ: यह जगत सेमल के पुष्प की तरह क्षणभंगुर तथा अज्ञानता में डालने वाला है। दस दिन के इस व्यवहार में, हे प्राणी! झूठमूठ के आकर्षण में अपने को डालकर स्वयं को मत भूलो।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
एकै आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होइ॥

अर्थ: सारे संसारिक लोग पुस्तक पढ़तेपढ़ते मर गए कोई भी पंडित (वास्तविक ज्ञान रखने वाला) नहीं हो सका। परंतु जो अपने प्रिय परमात्मा के नाम का एक ही अक्षर जपता है (या प्रेम का एक अक्षर पढ़ता है) वही सच्चा ज्ञानी होता है। वही परम तत्त्व का सच्चा पारखी होता है।

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय,
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।

अर्थ: जो हमारी निंदा करता है, उसे अपने अधिकाधिक पास ही रखना चाहिए। वह तो बिना साबुन और पानी के हमारी कमियां बता कर हमारे स्वभाव को साफ़ करता है।

दोस पराए देखि करि, चला हसन्त हसन्त,
अपने याद न आवई, जिनका आदि न अंत।

अर्थ: यह मनुष्य का स्वभाव है कि जब वह दूसरों के दोष देख कर हंसता है, तब उसे अपने दोष याद नहीं आते जिनका न आदि है न अंत।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप,
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।

अर्थ: न तो अधिक बोलना अच्छा है, न ही जरूरत से ज्यादा चुप रहना ही ठीक है। जैसे बहुत अधिक वर्षा भी अच्छी नहीं और बहुत अधिक धूप भी अच्छी नहीं है।

दुर्लभ मानुष जन्म है, देह न बारम्बार,
तरुवर ज्यों पत्ता झड़े, बहुरि न लागे डार।

अर्थ: इस संसार में मनुष्य का जन्म मुश्किल से मिलता है। यह मानव शरीर उसी तरह बार-बार नहीं मिलता जैसे वृक्ष से पत्ता झड़ जाए तो दोबारा डाल पर नहीं लगता।

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर,
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।

अर्थ: कोई व्यक्ति लम्बे समय तक हाथ में लेकर मोती की माला तो घुमाता है, पर उसके मन का भाव नहीं बदलता, उसके मन की हलचल शांत नहीं होती। कबीर की ऐसे व्यक्ति को सलाह है कि हाथ की इस माला को फेरना छोड़ कर मन के मोतियों को बदलो या फेरो।

बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि,
हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि।

अर्थ: यदि कोई सही तरीके से बोलना जानता है तो उसे पता है कि वाणी एक अमूल्य रत्न है। इसलिए वह हृदय के तराजू में तोलकर ही उसे मुंह से बाहर आने देता है।

कहत सुनत सब दिन गए, उरझि न सुरझ्या मन।
कही कबीर चेत्या नहीं, अजहूँ सो पहला दिन।

अर्थ: कहते सुनते सब दिन निकल गए, पर यह मन उलझ कर न सुलझ पाया। कबीर कहते हैं कि अब भी यह मन होश में नहीं आता। आज भी इसकी अवस्था पहले दिन के समान ही है।

जब गुण को गाहक मिले, तब गुण लाख बिकाई।
जब गुण को गाहक नहीं, तब कौड़ी बदले जाई।

अर्थ: कबीर कहते हैं कि जब गुण को परखने वाला गाहक मिल जाता है तो गुण की कीमत होती है। पर जब ऐसा गाहक नहीं मिलता, तब गुण कौड़ी के भाव चला जाता है।

संकलित
राजेश कुमार पटेल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक



बिटिया

परिवार में बिटिया तो बचपन से ही दुलारी सी ही रहती है, भले किसी के पिता ने उसे कभी जताया हो या नहीं | हमारी सामाजिक व्यवस्था ऐसी है कि लड़की के शादी के बाद उसे अपने घर को छोड़कर जाना पड़ता है, यह बात उसे तो बचपन में ही बता दिया जाता है | इस बात का कष्ट उसे बचपन से ही रहता है पर धीरे धीरे समय के अनुसार वो अपने आप को इस बात से तैयार कर लेती है | यह एक तरफ उसे दुःख तो देता है पर दूसरी तरफ उसकी माता पिता एवं परिवार को सवारने के लिए तत्पर करता है |



आखिर वह घड़ी एक दिन आ ही जाती है, वो सारी यादें, प्यार, फिक्र, बचपना, नाराजगी सभी सिलसिलेवार ढंग से आँखों से गुजरने लगती है जब विवाह की रस्मों के बीच यह ख्याल मन में दौड़ता है | मंत्र उच्चारण की ध्वनियाँ तब धीमी पड़ जाती है और मन में एक ही विचार कचोटती है, आँखें दो टूक बस माता पिता की ओर बार बार जाती है और बोलती है मैं छोड़कर जाना नही चाहती हूँ | पिता की आँखें मिलने से कतराती है कि कहीं सब्र की सीमा टूट न जाए, जो धाधास उन्होंने मुझे दिया है टूट न जाए | आँखों में आंसू लिए बेटी को बार बार समझाते हैं कि अपने और अपनों का ख्याल रखना, पर अंदर ही अंदर अपने आप को समझा रहे होते हैं | सारी रस्मों रिवाजों के बीच प्यारी बिटिया की विवाह की प्रसन्नता एक तरफ और मन में दुःख एक तरफ | पिता अपने आप को स्वागत समारोह की व्यवस्थाओं में उलझाये रखते हैं कि यह यादें उन्हें इस कष्ट से, प्यार से थोड़ी कम पीड़ा दें और इस तरह हर्षो उल्लास के विवाह समारोह में बिटिया का वो आँगन, घर छूट जाता है |

सुष्मिता कुमारी
पति : श्री हरि मोहन कुमार, लेखा परीक्षक

कोरोना काल में निर्वाचन



"आओ चलें ,आगे बढ़ें ,लोकतंत्र गढ़ें,
सोन की धार चलें,गंगा के पार चलें,
खुशियों के रंग खिलें,साहस अपार मिले,
कण-कण में दिव्य ज्ञान,चलो करें मतदान,
आओ करें मतदान।"

उपरोक्त पंक्तियों से यह स्पष्ट एहसास होता है कि लोकतंत्र के लिए मतदान वाला दिन सबसे बड़े त्यौहार की तरह होता है और चुनावी मौसम में किसी त्योहारी मौसम सा होता है । ये पंक्तियां बिहार विधानसभा चुनाव 2020 के मतदाता जागरूकता गीत से ली गई है। कोरोना काल के दौरान भारत में पहला आम चुनाव बिहार में कराया गया।

एक ओर जहाँ लोगों के स्वास्थ्य के सुरक्षा की चुनौती थी तो दूसरी ओर लोकतंत्र को सुरक्षित रखने की चुनौती। ऐसे में कई प्रकार की आशंकाओं का मन में उठना लाज़मी था। चूँकि बिहार में जनसंख्या घनत्व पूरे देश में सबसे अधिक है ऐसे में उस समय आई बाढ़ जैसी आपदा भी 'करेला नीम पर चढ़ा' जैसी पंक्तियां चरितार्थ कर रही थी।

ऐसी परिस्थिति में एक विकल्प यह भी था कि वर्तमान समय में चुनाव ना कराकर इसे फिलहाल के लिए स्थगित कर दिया जाए ,जैसा कि कुछ अन्य देशों ने किया भी था । परंतु निर्वाचन को स्थगित करना उचित विकल्प नहीं था क्योंकि इसमें कई जोखिम थे । जैसे- स्थगन समान अवसर की संभावनाओं को समाप्त करता है, तथा सत्ताधारी या विपक्ष को कमजोर करता है। निर्णय लेने वाले संगठन के सामने तथा लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विश्वास के संदर्भ में जोखिम उत्पन्न हो जाता है । इससे वित्तीय जोखिम ,कार्यकाल के विस्तार संबंधित चुनौतियां और सबसे बड़ा जोखिम स्थगन वाली निर्णय को कानूनी रूप से चुनौती दिया जा सकने वाला था।



इन सभी चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए निर्वाचन आयोग ने चुनाव को समय पर करवाने का निर्णय लिया। इस निर्णय के बाद कई तरह के कयास लगाए गए कि प्रचार रैलियाँ वायरस के प्रसार का कारण बनेंगी। मतदान केंद्र प्रभावित होंगे, क्योंकि कार्यकर्ताओं को इन केंद्रों में नियोजित करना कठिन होगा ,सुरक्षात्मक उपायों के लिए अत्याधिक धन की आवश्यकता होगी ,आवाजाही और संपर्क बाधित होने के कारण चुनाव की तैयारी करना कठिन होगा ,उच्च मतदान और समाज के विभिन्न समूहों में सामान स्तर की भागीदारी प्रभावित होगी, चुनाव में पारदर्शिता प्रभावित हो सकती है । इसके अलावा और भी कई तरह की संभावनाएं व्यक्त की गई।

भारतीय चुनाव आयोग ने न्यूजीलैंड और दक्षिण कोरिया में कोरोना काल के दौरान संपन्न चुनावों से प्रेरणा लेते हुए अपने देश में सभी सुरक्षात्मक उपायों को चुनाव में शामिल करने का फैसला किया। इसके साथ ही चुनाव आयोग ने बिहार में 17वीं विधानसभा चुनाव 28 अक्टूबर से 7 नवंबर 2020 के बीच चुनाव करवाने की घोषणा कर दी।

इस चुनाव में कोरोना महामारी के कारण कई बदलाव करने पड़े तथा नए मानक तय करने पड़े । जैसे- उम्मीदवारों को ऑनलाइन नामांकन की सुविधा, घर जाकर मात्र 5 लोगों को चुनाव प्रचार करने की अनुमति ,मतदान की अवधि को बढ़ाना ,पोस्टल बैलट द्वारा निशक्त, वृद्ध जनों को मतदान की सुविधा ,मतदान केंद्रों की संख्या में वृद्धि ,प्रत्येक मतदान केंद्रों में 1000 मतदाताओं की संख्या सुनिश्चित की गई, बड़ी बड़ी रैलियों की जगह वर्चुअल रैलियों को प्राथमिकता दी गई। प्रत्येक मतदान केंद्रों पर थर्मल स्कैनर, मास्क, सैनिटाइजर, फेस शील्ड, ग्लव्स, पी.पी.ई. किट आदि सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराए गए ताकि मतदाताओं के साथ और मतदान कर्मियों को भी कोरोना वायरस से सुरक्षा प्रदान किया जा सके।

इन प्रयासों के अलावा अन्य प्रयास भी किए गए जो प्रशंसनीय थे। बिहार विधानसभा चुनाव के अंतिम चरण का मतदान पूरा करने के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में राज्य के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री एच.आर. श्रीनिवास ने यह कह कर सैकड़ों साल पुराने इतिहास की याद दिला दी कि लोकतंत्र की नींव जिस वैशाली ने रखी थी यह उसी राज्य बिहार का हिस्सा है जो कोरोना जैसी महामारी के संकट में भी सुरक्षित और निष्पक्ष विधानसभा चुनाव कराकर लोकतंत्र के लिए मिसाल बन गया।

इस कठिन हालातों में भी वोटरों की स्वास्थ्य सुरक्षा के साथ-साथ निष्पक्ष शांतिपूर्ण चुनाव कराने के लिए भारतीय निर्वाचन आयोग द्वारा राज्य के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री एच.आर. श्रीनिवास की प्रशंसा की गई । राज्य स्तर पर कोरोना काल में बिहार विधानसभा निर्वाचन 2020 में प्रभावी प्रबंधन के लिए विशेष अवार्ड के लिए पटना जिला के प्रमंडलीय आयुक्त श्री संजय अग्रवाल का चयन किया गया । इसके साथ ही कई जिला निर्वाचन पदाधिकारियों को भी विशेष अवार्ड के लिए चुना गया। इस प्रकार कोरोना काल में निर्वाचन सफल रहा।

सूरज कुमार,
क. हिंदी अनुवादक

आज अतीत में जीना

अहाना और सोहम की नई-नई शादी हुई थी ।दोनों एक दूसरे से बहुत प्रेम करते थे। शादी के 4 साल बाद उनकी एक बेटी हुई जिसका नाम उन्होंने कियारा रखा। बीतते वक्त के साथ कियारा बहुत सुंदर, परियों सी, किसी को भी अपने मासूम शक्ल से मोह लेने वाली लड़की बन गई। इस छोटे से परिवार में प्रेम परस्पर बढ़ता गया ।सब बहुत खुश थे और देखते-देखते कियारा आठ वर्ष की हो गई।

एक दिन अचानक कियारा की तबियत बहुत खराब हो गई। महीनों उसका इलाज चला, पर हालत दिन-पर-दिन बिगड़ते गई। परिणामतः उसकी आंखों की रोशनी चली गई। अहाना और सोहम ने हर संभव कोशिश की पर वह ठीक ना हो सकी। कियारा हर दिन उनसे पूछा करती थी कि उसे सिर्फ अंधेरा ही क्यों झलकता है पर जवाब में उसे निराशा के सिवा कुछ ना मिलता था। धीरे-धीरे समय के साथ कियारा इस सच से वाकिफ हो गई और इसे स्वीकार कर लिया। उसकी इस हालत को अहाना बर्दाश्त ना कर सकी और जब कियारा 10 साल की थी तब अहाना सभी बंधनों को तोड़कर ईश्वर को प्राप्त हो गई।

सोहम की सहनशक्ति भी अपने चरम सीमा पर पहुंच चुकी थी। वह ना तो कियारा को छोड़कर जा सकता था और ना ही कियारा के नादान सवालों में छिपे दर्द का सामना कर पा रहा था। वह पूछती - "पापा ! भगवान मेरे से नाराज हैं क्या ? पहले उन्होंने मेरी आंखों की रोशनी छीन ली! फिर मम्मा! क्यों?

किसी तरह सोहम उसे समझाता-बुझाता और इस तरह दिन कटते रहे।

xxxx

सिया एक बहुत जिद्दी स्वभाव की लड़की थी। हर बात पर चिल्लाने की उसकी आदत थी। कुछ करने से पहले शायद खुदगर्ज होकर सोचना और फिर वह काम करने के बाद पछताया करना उसकी आदत सी बन चुकी थी। जीवन में एक वक्त ऐसा भी आया जब उसे यह एहसास हुआ कि खुद से ज्यादा दूसरों के बारे में भला सोच कर बहुत सुकून मिलता है। उसे एक लड़के से प्रेम हो गया था, पर किस्मत में शायद अलग होना लिखा था। इस प्रेम से वह बहुत प्रभावित हुई और इस घटना ने उसे औरों की भावनाओं की कदर करना सिखा दिया था।

अचानक सिया का रिश्ता सोहन से तय कर दिया गया ।अतीत में सिया के साथ जो हुआ उसके बाद उसने बोलना या सवाल करना छोड़ दिया था ।अतीत की घटनाओं से आहत सोहम और सिया एक नए बंधन में बंध जाते हैं ।सिया को शादी की ना कोई खुशी थी और ना कोई दुःख। ना उसे किसी से कोई सवाल करना होता था और ना कोई जवाब देना होता था ।उसका अतीत उसे किसी में रूचि लेने की इजाजत नहीं देता था। शादी के बाद कियारा ने कभी सिया को अपनी मां के रूप में स्वीकार नहीं किया पर सिया को उसकी बहुत फिक्र होती थी। सिया ने उसे तोहफा देने की ठान ली।

xxxx

21 वर्ष की उम्र में कियारा की शादी हो गई। आज कियारा देख सकती थी फिर से पूरी दुनिया को, सिया की आंखों से सिर्फ सिया को नहीं देख सकती।

आज कियारा सिया की बहुत इज्जत करती है।

xxxx

सिया को जीवन से कोई मोह ना होने के कारण वह कियारा को तोहफा देकर कब का चली गई। सोहम भी कियारा की शादी के बाद अपने जीवन से जिसे वह बेड़ियां समझता था, उस से मुक्त हो गया।

प्रेरणा किशोर
पिता:- जे. किशोर,
सहा. लेखा परीक्षा अधिकारी/ राजभाषा

उन दिनो में डायरी का एक पन्ने से !



बड़े बड़े शहरों से हजारों के तादाद में जिस प्रकार
लोग अपने घर अपना देश पलयन कर रहे हैं,
भुखे प्यासे कई सौ किलोमीटर , पैदल
या किसी सामान से लदी लॉरी पर,
दिन की धूप और रात कि सर्दी की परवाह किए बिना,
सोफे पर बैठे, टीवी के चैनल बदलते बदलते
या स्मार्टफोन पर उंगलियाँ चलाते चलाते
इन कामगारों की दुर्दशा देखकर
न जाने क्यूँ एक अपराध बोध या फिर शर्म सी आती है !
कभी कभी देख कर भी न देखने का ढोंग कर के
जल्दी से चैनल बदलकर आगे बढ़ जाने से भी,
मन के किसी कोने से
ये प्रश्न बार-बार और लगातार आता है कि
आज जब जरुरत पड़ी और अपनी जान पर बन आई
तो हम न सिर्फ अपने अपने घर में घुसे बैठें हैं
बल्कि अपने सगे संबंधियों को भी कहते हैं
कि वे न जाएँ बाहर
लेकिन, इस घर की ईंट ईंट पर बसी है जिनकी
उँगलियों के निशान देखो केसे अपनी दुनियाँ गठरी में
समेटे लंबी कतारों में काली हाईवे पर एक
सच है ! जिसकी बास नहीं, उसकी आश नहीं !
जीवन की जद्दोजहद में , क्या
रोटी ,कपड़ा और मकान की जुगाड़ इनसे
सब भुला देगी ? क्या इस दुर्दशा का ठीकरा भी
भाग्य और भगवान पर ही फूटेगा ?
क्या ये कभी जान भी पायेंगे कि
कुछ आपदाएँ मनुष्यकृत भी तो होती हैं ! होती है न ?

गोबिंद दीप,
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

एकता में बल है

एक आदमी के सात पुत्र थे। इन पुत्रों में मेल नहीं था। भी एक दूसरों से लड़ाई करते थे। बूढ़े आदमी को इससे बड़ा दुख था। वह अपने पुत्रों से कहा करता था, एकता में बल है। यदि तुम लोग मेल से रहोगे तो तुमको किसी शत्रु से भय नहीं रहेगा और बेमेल रहने पर एक अकेला साथ में तुम सबको जीत सकता है।



लड़कों को भूल है कि इस बात पर विश्वास नहीं होता था। एक दिन बूढ़ा आदमी अपनी लड़कों के साथ खेत में काम कर रहा था। खेत के निकट एक आम का पेड़ था। पेड़ की एक बड़ी डाल खेत के ऊपर लहरा रही थी। डाल की छांव से खेत की फसल को हानि पहुंचती थी। बूढ़े ने डाल में एक रस्सी बांध दिया और लड़कों से कहा कि बारी-बारी से रस्सी खींच कर डाल तोड़ दे लड़कों ने अलग-अलग प्रयत्न किया परंतु डाली तोड़ ना सके और थक कर बैठ गए । बूढ़े ने कहा कि अब तुम सभी मिलकर एक साथ बल लगाओ। सातों लड़कों ने एक साथ रस्सी खींची और डाल टूट गई। बूढ़े ने कहा - "बच्चों! क्या तुम लोगों ने पेड़ की इस डाल के टूटने से कुछ नहीं सीखा?" सभी ने एक स्वर में चिल्ला कर कहा- पिताजी, एकता में बल है ,आपकी बात ठीक है। हम सात भाई अब आपस में मिले रहेंगे और कोई भी शत्रु हमें हरा नहीं सकेगा।

सुश्री सागरिका साहू
पिता:-श्री गणेश्वर साहू, लेखा परीक्षक

राजकुमार और परी

एक देश में एक राजा शासन करते थे ।उनकी एक रानी और एक बेटा था। राजकुमार का नाम था आनंद। एक दिन आनंद ने अकेले सारा विश्व की सैर करने की जिद की ।राजा ने तो हां भर दी लेकिन रानी को मनाना मुश्किल था। बड़ी कठिनाई से रानी को राजी कर आनंद भ्रमण के लिए निकल पड़ा ।जाते समय रानी ने उसे पोटली दी। बिना कुछ बोल कर उसने पोटली उठाई और निकल गया। जाते-जाते हुए एक सुंदर हवेली के पास रुक गया और अंदर चला गया। लेकिन ये क्या?

उस हवेली की सारी चीजें पत्थर की हो गई थी उस हवेली के अंदर एक अद्‌भुत सा उज्जवल आलोक जल रहा था। आनंद हवेली से निकल आया और बाहर बैठ गया उसने जब पोटली खोली तो पाया कि उसमें केवल कुछ मिट्टी है। उस मिट्टी को वह कुछ समय हाथ में रख कर देखा और फेंक दिया। तभी वहां एक विमान आकर पहुंच गया। उसमें से परी रानी निकल कर आई। परी रानी आनंद को लेकर अंदर चली गई। आनंद ने देखा कि सारी चीजें पत्थर में बदल गई हैं। परी रानी और आनंद दोनों एक मेज के पास बैठ गए। परी रानी बोली कि उस हवेली को परियों ने बनाई थी। एक दिन जब सारी परियाँ ने उस हवेली में आकर नाच- गा रही थी तभी एक देश के राजा अपने सैनिकों के साथ परियों को बंदी बना ली। उस समय आनंद की मां उन परियों को निकलवाई थी। उनकी इस सहायता की कीमत चुकाने के लिए परी रानी ने उन्हें कुछ जादुई मिट्टी दी थी।

उस दिन से परी उस हवेली को नहीं आ रही है और सारी चीजें पत्थर की बनी हुई है। इतना सब बोलने के बाद परी रानी फिर से बोली ,अगर आनंद चाहेंगे तो उस विमान पर बैठकर सारा विश्व का भ्रमण कर सकेंगे। यह सब सुनकर आनंद विमान के अंदर बैठ गया और विमान उड़ने लगा। वह सारा विश्व का भ्रमण करके अपने राज्य में लौट गया और उस विमान से अपने महल को गया। राजा रानी को प्रणाम करके सारी बातें बताई और अपनी मां को धन्यवाद दिया।

सुश्री स्वागतिका साहू
पिता- श्री गणेश्वर साहू, लेखा परीक्षक

जिंदगी में रिश्तों का स्वाद

जो कह दिया वह शब्द थे
जो नहीं कर सके
वह अनुभूति थी
और..जो कहना है; मगर कह नहीं सकते,
वह मर्यादा है ।

जिंदगी का क्या है? आकर नहाया ,
और नहा कर चल दिए।
बात पर गौर करना....
पत्तों सी होती है
कई रिश्तों की उम्र
आज हरे , कल सूखे ।

क्यों ना हम जड़ो से,
रिश्तो को निभाना सीखें।
रिश्तो को निभाने के लिए,
कभी अंधा , कभी गूंगा,
और कभी बहरा होना पड़ता है।

बरसात गिरी और
कानों में इतना कह गई कि
गर्मी हमेशा किसी की भी नहीं रहती
नसीहत नरम लहजे में
अच्छी लगती है क्योंकि ...
दस्तक का मकसद,
दरवाजा खुलवाना होता है , तोड़ना नहीं।

घमंड...
किसी का भी नहीं रहा
टूटने से पहले
गुल्लक को भी लगता है कि
सारे पैसे उसी के हैं।

जिस बात पर कोई मुस्कुरा दे
बात.... बस वही खूबसूरत है,
थमती नहीं जिंदगी कभी
किसी के बिना
मगर...
वह गुजरती भी नहीं अपनों के बिना ।

सुश्री बी. श्यामला ,
पिता- श्री बी. रामचंद्र राव, लेखा परीक्षक

सर्दियों की सुबह

हालांकि सर्दियों का मतलब पौष और माघ के महीनों में होता है, लेकिन सर्दियों का आगमन वास्तव में आश्विन के महीने की में ही हो जाता है। पौष के अंत में, सर्दियों का प्रकोप तेज हो जाता है, जोकि फाल्गुन के महीने तक रहता है। आमतौर पर इस समय फसल का मौसम होता है जिससे चारों ओर उत्सव का माहौल देखा जा सकता है। सर्दियों की सुबह में एक विशेष माहौल रहता है। इसलिए सर्दियों को हर कोई पसंद करता है।

सर्दियों की सुबह का वर्णन:

घने कोहरे और कँपकपाने वाले मौसम के बिना सर्दियों की सुबह की कल्पना असंभव है। वह एक कोहरे की मोटी कंबल के साथ अपने ठंडे आगमन की घोषणा करती है। इस तरह की पेंटिंग प्रकृति में हर जगह देखी जा सकती हैं। प्रकृति अपना रूप-रस-रंग बहाती है और सौन्दर्यता के पालन में व्यस्त हो जाती है। जानवरों और प्राणियों का जीवन हरा और पीला हो जाता है । सर्दियों की रातें बहुत लंबी होती हैं, मानो खत्म ही नहीं होना चाहते। इसलिए हर कोई थोड़ी मीठी धूप के लिए सूरज का इंतजार कर रहा होता है। सूरज को थोड़ी सी रोशनी बिखेरने के लिए कोहरे की मोटी दीवार से होकर गुजरना पड़ता है ।

गाँवों में सर्दियों की सुबह :

विंटर मॉर्निंग शॉट्स गांव में अनोखे होते हैं। मानो प्रकृति ने अपना सारा सौंदर्य आसपास के मौसम में डाल दिया हो। धुंध की सुबह घनी धुंधली होती है, और जब आप मैदान के दूसरी तरफ देखते हैं, तो आपको एक विशाल सफेद सितारा के अलावा कुछ भी नहीं दिखता है। लेकिन इस ठंड के बावजूद, किसान अपने खेत में चला जाता है। गांव के लोग ठंड से बचने के लिए आग जलाकर अपने हाथों और पाँवों को सेंकते हैं । ठंड से बचने के लिए कई प्रकार के भोजन बनाए जाते हैं, विशेष रूप से खजूर के रस से बने कई मीठे केक ।



गाँव में, लोग सूरज की रोशनी में खड़े होते हैं और सूरज उगते ही गर्मी का एहसास करते हैं।

शहरों में सर्दियों की सुबह:

सर्दियों की तस्वीर ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में अलग है। शहरी क्षेत्रों में सर्दियोंका प्रकोप अपेक्षाकृत कम होता है। शहरी क्षेत्रों में, लोगों को धूप की गर्मी का अनुभव करने का मौका नहीं मिलता है। कई लोग घर में हीटर या अन्य उपकरण चलाकर ठंड को दूर रखने की कोशिश करते हैं।

सुबह जल्दी उठने के उपाय:-

सर्दी के मौसम में सुबह जल्दी उठना किसी तकलीफ से कम नहीं है। इसलिए कुछ उपाय अपना कर आप इस समस्या से निजात पा सकते हैं।

- सुबह जल्दी उठने के लिए अपने बिस्तर के पास एक गिलास पानी रखें। सुबह के बाद सबसे पहले एक गिलास पानी पिए जिससे आपकी नींद तुरंत गायब हो जायेगी।
- अगर आप अलार्म लगा कर सोते हैं तो उसे अपने पास ना रखें बल्कि उसे दूर रखें ताकि जब अलार्म बजे तो आप उठ कर उसे बंद करने जाएं जिससे आपकी नींद दूर होगी।
- सुबह अलार्म बजते ही जल्दी से बिस्तर छोड़ दें। इस तरह से दिन की शुरुआत भी सकारात्मक होगी और आपको नींद भी नहीं आएगी।

निष्कर्ष:

धुंधली सर्दियों की सुबह एक मीठे दृश्य के साथ आती है। सर्दी , ओस से लथपथ पत्तियाँ , सूरज की गर्म प्रकाश, एवं सभी प्रकार के स्वादिष्ट भोजन प्रदान कर हमें एक अनूठी छाप देती है।

मिन्टू हालदार
लेखापरीक्षक

नारी

नारी सृष्टि का ही रूप है ।भारतीय नारी सृष्टि के प्रारंभ से अनंत गुणों के आधार बना रहा है। पृथ्वी की सी क्षमता, सूर्य का सा तेज, समुद्र की सी गंभीरता ,चंद्रमा की सी शीतलता , पवनों की सी गति हमको एक साथ नारी के हृदय में दृष्टिगोचर होता है। वह ममतामई है ।उसके सामान कोमल है। वह है दया, क्षमा, करुणा, ममता एक साथ प्रेम की पवित्र मूर्ति जिसमें सभी शक्तियां समाहित हैं।

नारी मानव जीवन की जन्म दात्री है। वह नर की शक्ति है। नर और नारी एक दूसरे के पूरक है। वह माता, बहन ,पत्नी और पुत्री आदि रूपों में पुरुष में कर्तव्य की भावना जगाती है वह मां के समान हमारी रक्षा करती है। मित्र और गुरु के सदृश्य हमको शुभ कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं । बालअवस्था से मृत्यु तक वह हमारी संरक्षिता होकर रह जाती हैं किंतु चोट खाकर वह बज्र से भी कठोर हो जाती है। तब वह न माता रहती है ना प्रिया। उसका एक ही रूप होता है और वह है दुर्गा का। नारी का त्याग और बलिदान भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है।

स्वस्तिक सारंगी
पिता- श्री अजय कुमार सारंगी, एम. टी. एस.

जय भारत

ए वतन ! ए वतन, तू है मेरा चमन ।
तेरे लिए लड़ेंगे आखिर में क्यों ना देना पड़े जीवन ।।

तेरे इस मिट्टी से खेला है
तेरी नदियों का पानी पिया है
तेरे इस वनों से फल खाया है
परंतु हमने तुझे क्या दिया है?
माँ के जैसे तूने किया है हमारा पालन-पोषण ।
यदि आवश्यकता पड़ी तो हम अवश्य देंगे जीवन ।।

यही समय है ,खुद को साबित करने का ।
अपने दृष्टिकोण बदल कर
इस देश के उपकार को चुकाने का
यही सही अवसर है कुछ कर दिखाने का ।
तो चलो लेते हैं एक संकल्प देश को गौरव अनुभव कराएंगे ।
जिससे सब खुशी से कह पाएंगे।।
महान भारत ! श्रेष्ठ भारत ! जय भारत!

स्नेहा राउत
पिता- श्री पी. सी. राउत

ठहाके!

अंग्रेजी के अलावा हिंदी में भी कुछ शब्द साइलेंट होते हैं जैसे कि अगर ध्यान दिया हो तो....

जब कोई दुकानदार भाव करते समय कहता है कि
"आपको ज्यादा नहीं लगाएंगे"
तो इसमें "चुना" शब्द साइलेंट होता है।

शादी के समय यह कहा जाता है कि
हमारी लड़की तो "गाय है गाय "
उसमें "सींगवाली" शब्द साइलेंट होता है।

विदाई के वक्त जब दूल्हे से कहा जाता है
"ख्याल रखना"
इसमें "अपना" शब्द साइलेंट रहता है।

जब कोई नेता कहता है
"गरीबी हटाउँगा"
तब "अपनी" शब्द साइलेंट होता है।

बी. रामचंद्र राव,
लेखापरीक्षक

जिज्ञासा



प्रश्न-जीवन का उद्देश्य क्या है ?
उत्तर- जीवन का उद्देश्य उसी चेतना को जानना है - जो जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त है। उसे जानना ही मोक्ष है..!!
प्रश्न-जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त कौन है ?
उत्तर- जिसने स्वयं को, उस आत्मा को जान लिया - वह जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त है..!!
प्रश्न-भाग्य क्या है ?
उत्तर- हर क्रिया, हर कार्य का एक परिणाम है। परिणाम अच्छा भी हो सकता है, बुरा भी हो सकता है। यह परिणाम ही भाग्य है तथा आज का प्रयत्न ही कल का भाग्य है..!!
प्रश्न- इस जगत में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है ?
उत्तर- रोज़ हजारों-लाखों लोग मरते हैं और उसे सभी देखते भी हैं, फिर भी सभी को अनंत-काल तक जीते रहने की इच्छा होती है..इससे बड़ा आश्चर्य और क्या हो सकता है..!!
प्रश्न-किस चीज को गंवाकर मनुष्य धनी बनता है ?
उत्तर- लोभ..!!
प्रश्न- कौन सा एकमात्र उपाय है जिससे जीवन सुखी हो जाता है?
उत्तर- अच्छा स्वभाव ही सुखी होने का उपाय है..!!
प्रश्न-किस चीज़ के खो जाने पर दुःख नहीं होता ?
उत्तर- क्रोध..!!
प्रश्न-धर्म से बढ़कर संसार में और क्या है ?
उत्तर- दया..!!
प्रश्न-क्या चीज़ दुसरो को नहीं देनी चाहिए ?
उत्तर-तकलीफें, धोखा..!!
प्रश्न-क्या चीज़ है, जो दूसरों से कभी भी नहीं लेनी चाहिए ?
उत्तर- इज़्ज़त, किसी की हाय..!!
प्रश्न-ऐसी चीज़ जो जीवों से सब कुछ करवा सकती है ?
उत्तर-मज़बूरी..!!
प्रश्न- दुनियां की अपराजित चीज़ ?
उत्तर- सत्य..!!
प्रश्न- दुनियां में सबसे ज़्यादा बिकने वाली चीज़ ?
उत्तर- झूठ..!!
प्रश्न- करने लायक सुकून का कार्य ?
उत्तर- परोपकार..!!
प्रश्न- दुनियां की सबसे बुरी लत ?
उत्तर- मोह..!!
प्रश्न- दुनियां का स्वर्णिम स्वप्न ?
उत्तर- जिंदगी..!!
प्रश्न- दुनियां की अपरिवर्तनशील चीज़ ?
उत्तर- मौत..!!
प्रश्न- ऐसी चीज़ जो स्वयं के भी समझ ना आये ?
उत्तर- अपनी मूर्खता..!!
प्रश्न-दुनियां में कभी भी नष्ट/ नश्वर न होने वाली चीज़ ?
उत्तर- आत्मा और ज्ञान..!!
प्रश्न-कभी न थमने वाली चीज़ ?
उत्तर- समय
प्रश्न-संसार में दुःख क्यों है ?
उत्तर- लालच, स्वार्थ और भय ही संसार के दुःख का मुख्य कारण हैं..!!
प्रश्न-ईश्वर ने दुःख की रचना क्यों की ?
उत्तर- ईश्वर ने संसार की रचना की और मनुष्य ने अपने विचार और कर्मों से दुःख और सुख की रचना की..!!
प्रश्न-क्या ईश्वर है ? कौन है वे ? क्या रुप है उनका ? क्या वह स्त्री है या पुरुष ?
उत्तर- कारण के बिना कार्य नहीं। यह संसार उस कारण के अस्तित्व का प्रमाण है। तुम हो, इसलिए वे भी है - उस महान कारण को ही आध्यात्म में 'ईश्वर' कहा गया है। वह न स्त्री है और ना ही पुरुष..!!

संकलित
निरंजन परिडा/ सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

कोरोना वायरस: लॉकडाउन एवं प्रदूषण

पिछले कुछ महीनों में हमारी दुनिया एकदम बदल गई है। हज़ारों लोगों की जानें चली गई। लाखों लोग बीमार पड़े हुए हैं। इन सब पर एक नए कोरोना वायरस का क़हर टूटा है और जो लोग इस वायरस के प्रकोप से बचे हुए हैं, उनका रहन सहन भी एकदम बदल गया है। ये वायरस दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर में पहली बार सामने आया था, उसके बाद से दुनिया में सब कुछ उलट पुलट हो गया।

इसकी शुरुआत वुहान से ही हुई, जहां पूरे शहर की तालाबंदी कर दी गई। इटली में इतनी बड़ी तादाद में वायरस से लोग मरे कि वहां दूसरे विश्व युद्ध के बाद पहली बार लोगों की आवाजाही पर इतनी सख़्त पाबंदी लगानी पड़ी। ब्रिटेन की राजधानी लंदन में पब, बार और थिएटर बंद कर दिए गए। लोग अपने घरों में बंद हो गए , दुनिया भर में उड़ानें रद्द कर दी गई और बहुत से संबंध सोशल डिस्टेंसिंग के शिकार हो गए । ये सारे क़दम इसलिए उठाए गए ताकि नए कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने से रोका जा सके और इससे लगातार बढ़ती जा रही मौतों के सिलसिले को थामा जा सके।

इन पाबंदियों का एक नतीजा ऐसा भी निकला जिसकी किसी को उम्मीद नहीं थी । लॉकडाउन में सुबह अक्सर नींद अलार्म से नहीं परिंदों के शोर से खुलती थी , जिनकी आवाज़ भी हम भूल चुके थे। ज़रा देर के लिए बालकनी में जाते थे तो आसमान अजनबी की भांति नजर आता था । इतना नीला आसमान रहता था कि,बहुत से लोगों ने ज़िंदगी में शायद पहली बार देखा होगा। फ़लक पर उड़ते हुए सफ़ेद रूई जैसे बादल बेहद दिलकश लग रहे थे। सड़क किनारे लगे पौधे एकदम साफ़ और फूलों से गुलज़ार थे। सरकार हज़ारों करोड़ ख़र्च करके भी जो काम नहीं कर पाई लॉकडाउन के दिनों ने वो कर दिखाया।

ऐसी ही तस्वीरें दुनिया के तमाम दूसरे शहरों में भी देखने को मिली थी। इसमें शक नहीं कि नया कोरोना वायरस दुनिया के लिए काल बनकर आया था।

इस नन्हे से वायरस ने हज़ारों लोगों को अपना निवाला बना लिया । अमरीका जैसी सुपरपावर की हालत ख़राब हो गई । इन चुनौतियों के बीच एक बात सौ फ़ीसद सच है कि दुनिया का ये लॉकडाउन प्रकृति के लिए बहुत लाभदायक साबित हुआ था। वातावरण धुल कर साफ़ हो चुका था। हालांकि ये तमाम कदम कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिया गया था ।

लॉकडाउन की वजह से तमाम फ़ैक्ट्रियां बंद हो गईं, यातायात के तमाम साधन बंद हो गए । अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अर्थव्यवस्था को भारी धक्का लगा । लाखों लोग बेरोज़गार हो गए । शेयर बाज़ार ओंधे मुंह आ गिरा। लेकिन अच्छी बात ये है कि कार्बन उत्सर्जन रुक गया। कई बड़े शहरों में पिछले साल की तुलना में इस साल वहां का प्रदूषण 50 प्रतिशत कम हो गया ।कुछ लोगों का कहना है कि इस महामारी को पर्यावरण में बदलाव के तौर पर देखा जाना चाहिए, कोरोना काल में सब कुछ बंद था तो कार्बन उत्सर्जन रुक गया था । लेकिन जब दुनिया फिर से पहले की तरह चलने लगी तो कार्बन उत्सर्जन फिर से बढ़ने लगा । पर्यावरण में जो बदलाव हम आज देख रहे हैं क्या वो हमेशा के लिए स्थिर हो जाएंगे,दुनिया के कुल कार्बन उत्सर्जन का ज्यादा हिस्सा परिवहन से निकलता है। इनमें से भी निजी गाड़ियों और हवाई जहाज़ की वजह से दुनिया भर में सबसे ज्यादा कार्बन उत्सर्जन होता है। कोरोना काल में लोग घरों में बंद थे । ऑफ़िस का काम भी घर से कर रहे थे । अपने परिवार और दोस्तों को वक़्त दे पा रहे थे । मुश्किल की घड़ी में हो सकता है लोग इसकी अहमियत समझें और बेवजह गाड़ी लेकर घर से निकलने से बचेंगे ।अगर ऐसा होता है तो मौजूदा पर्यावरण के हालात थोड़े परिवर्तन के साथ लंबे समय तक चल सकते हैं। मगर बहुत से लोगों के लिए हर रोज़ ऑफ़िस आना और दिल लगाकर काम करना ही ज़िंदगी का मक़सद होता है। उन्हें घर में बैठना बिल्कुल नहीं भाएगा। वो इस लॉकडाउन को क़ैद की तरह देखेंगे । हो सकता है वो अभी ये प्लानिंग ही कर रहे हों कि जैसे ही वायरस खत्म होगा वो फिर से कहीं घूमने निकलेंगे,

लॉन्ग ड्राइव पर जाएंगे। अगर ऐसा होता है तो बहुत जल्द दुनिया की आब-ओ-हवा में ज़हर घुलने लगेगा।

आज हम मेडिकल साइंस के लिहाज़ से भी काफ़ी आगे बढ़ चुके हैं। लिहाज़ा उम्मीद यही है कि नए कोरोना वायरस से उतनी मौत नहीं होंगी, जितनी पिछली सदियों की महामारियों में हो चुकी हैं। जिस तरह मौजूदा समय में जान बचाना लोगों की प्राथमिकता बना हुआ है वैसे ही लोगों को पर्यावरण के प्रति चिंतित कराया जाना ज़रुरी है।पर्यावरण को बचाने के लिए लोगों को अपनी आदतें बदलनी होंगी। अगर वो ख़ुद नहीं बदलते हैं, तो उन्हें जबरन बदलवाना पड़ेगा जैसा जापान में हुआ था। यहां मोटर वाले रास्ते बंद कर दिए गए और लोगों को सार्वजनिक परिवहन इस्तेमाल करने को मजबूर किया गया। धीरे-धीरे ये लोगों की आदत में शामिल हो गया। जब दोबारा रास्ते खुले तो भी ज़्यादातर लोग सार्वजनिक परिवहन का ही इस्तेमाल कर रहे थे। लेकिन इसके लिए सरकारों को सार्वजनिक परिवहन की स्थिति बेहतर करनी होगी।

कोरोना वायरस की महामारी ने ना जाने कितनों से उनके अपनों को हमेशा के लिए जुदा कर दिया है। हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर इसका बहुत नाकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। ना जाने कितनों का रोज़गार ख़त्म हुआ है। अर्थव्यवस्था पटरी पर कब लौटेगी ये भी कहना मुश्किल है। लेकिन इस महामारी ने एक बात साफ़ कर दी कि मुश्किल घड़ी में सारी दुनिया एक साथ खड़ी होकर एक दूसरे का साथ देने के लिए तैयार है। तो फिर क्या यही जज़्बा और इच्छा शक्ति हम पर्यावरण बचाने के लिए ज़ाहिर नहीं कर सकते? हमें उम्मीद है इस समय का अंधकार हम स्वच्छ और हरे-भरे वातारण से मिटा देंगे।

निरुपम कर्मकार
लेखापरीक्षक



बढ़ता चल

आएगी अनेक अड़चने सामने तेरे
जब साथ ही छोड़ जाएंगे अपने तेरे
होना ना उदास
बस तू बढ़ता चल बढ़ता चल

रहेंगे कई रास्ते सामने तेरे
मालूम ना रहेगी असल मंजिल तेरी
रखकर खुद पर भरोसा
बस तू बस बढ़ता चल बढ़ता चल

कई लोग उड़ाएंगे मजाक तेरा
कुछ उठाएंगे फायदा तेरा
खुद को संभाल कर
बस तू बढ़ता चल बढ़ता चल

बना बनाया खेल है ये जिंदगी
सूक्ष्म में अनंत का मेल है ये जिंदगी
कर्मों के हिसाब -किताब का हर मोड़ है जिंदगी
सुख-दुख की धूप-छांव का जोड़ तोड़ है ये जिंदगी

चलाने वाला वह एक ही है
बस सही को चुनना,
यही भेद है ये जिंदगी।

प्रभात रंजन
वरि.लेखापरीक्षक

बुराई जड़ से ख़त्म करो

बुराई की ऊपरी कांट-छांट से वह नहीं मिटती,उसे तो उसकी जड़ से मिटाना होता है। जब तक जड़ को नष्ट नहीं किया जाएगा ,तब तक कोई लाभ नहीं होगा।

किसी नगर में एक आदमी रहता था। उसके आँगन में एक पौधा उग आया। कुछ दिनों बाद वह बड़ा हो गया और उस पर फल लगने लगे। एक बार एक फल पककर नीचे गिर गया। उस फल को एक कुत्ते ने खा लिया। जैसे ही कुत्ते ने फल खाया, उसके प्राण निकल गए। आदमी ने सोचा--कोई बात होगी जिससे कुत्ता मर गया। पर उसने पेड़ के फल पर ध्यान नहीं दिया।

कुछ समय बाद उधर से एक लड़का निकला। फल देखकर उसके मन में लालच आ गया और उसने किसी तरह फल तोड़कर खा लिया। फल को खाते ही लड़का मर गया। मरे हुए लड़के को देख आदमी की समझ में आ गया कि यह जहरीला पेड़ है। उसने कुल्हाड़ी ली और वृक्ष के सारे फल काटकर गिरा दिए। थोड़े दिन बाद पेड़ में फिर फल लग गए। लेकिन इस बार पहले से भी ज्यादा बड़े फल लगे थे। आदमी ने फिर कुल्हाड़ी से फल के साथ-साथ शाखाओं को भी काट दिया। परंतु कुछ दिन बाद पेड़ फिर फलों से लद गया। अब आदमी की समझ में कुछ नहीं आया। वह परेशान हो गया। तभी उसके पड़ोसी ने उसे देखा और उसकी परेशानी का कारण पूछा। आदमी ने सारी बातें बता दी।

यह सब सुनकर पड़ोसी ने कहा --तुमने पेड़ के फल तोड़े,उसकी शाखाएं काटी , पर तुम्हारी समझ में नहीं आया कि जब तक पेड़ की जड़ रहेगी तब तक पेड़ रहेगा और उसमें फल आते रहेंगे। अगर तुम इससे छुटकारा चाहते हो तो इसकी जड़ काटो।

तब आदमी की समझ में आया कि बुराई की ऊपरी कांट-छांट से वह नहीं मिटती,उसे तो उसकी जड़ से मिटाना चाहिए। उसने कुल्हाड़ी लेकर पेड़ की जड़ को काट दिया और हमेशा के लिए चिंता मुक्त हो गया।

इसी तरह बुराई की जड़ हमारे मन में होती है। जब तक जड़ को नष्ट नहीं किया जाएगा, मनुष्य को जहरीला बनाने वाले फल आते रहेंगे।

अजय कुमार सारंगी
एम.टी.एस.

नथनी

एक बार कबीरदास जी हरि भजन करते एक गली से निकल रहे थे। उनके आगे कुछ स्त्रियाँ जा रही थीं। उनमें से एक स्त्री की शादी कहीं तय हुई होगी तो उसके ससुरालवालों ने शगुन में एक नथनी भेजी थी। वह लड़की अपनी सहेलियों को बार-बार नथनी के बारे में बता रही थी कि नथनी ऐसी है वैसी है। ये ख़ास उन्होंने मेरे लिए भेजी है। बार बार बस नथनी की ही बात।

उनके पीछे चल रहे कबीरजी के कान में सारी बातें पड़ रही थीं। तेजी से कदम बढ़ते कबीर उनके पास से निकले और कहा

नथनी दीनी यार ने, तो चिंतन बारम्बार, नाक दिनी करतार ने, उनको दिया बिसार।

सोचो यदि नाक ही ना होती तो नथनी कहां पहनती ! यही जीवन में हम भी करते हैं। भौतिक वस्तुओं का तो हमें ज्ञान रहता है परंतु जिस परमात्मा ने यह दुर्लभ मनुष्य देह दी और इस देह से संबंधित सारी वस्तुएं, सभी रिश्ते-नाते दिए, उसी को याद करने के लिए हमारे पास समय नहीं होता ।

सुश्री सुभस्मिता नायक
पिता-श्री बुद्धनाथ नायक
एम.टी.एस.



माँ के नाम

कितनी भोली है माँ मेरी
कितनी प्यारी है मेरी माँ।
मुझमें प्राण भरने वाली तू
दया, करूणा की मूरत तू
ममता का सागर है तू।

हे जीवन दायिनी तुझे शत शत प्रणाम
तूने लाखों दुःख सहे
पीड़ा के आंसू छलके
पर तेरी ममता तो
इन आंसुओं से बढ़कर निकले।

आज उम्र के इस पड़ाव पर भी
कितनी फिक्र करती है हमारी
तेरी विशाल हृदयता के सामने
सागर भी पीछे रह जाए
हे जननी तुझे प्रणाम।

मुझे सूखे पर सुलाकर
खुद गीले पर सोयी
बीमार मैं था रातभर तू जागी
माँ तेरे उपकारों का बदला हम
कैसे दे सकते हैं?
माँ से बढ़कर कोई नहीं
माँ से बढ़कर कोई प्यार नहीं।।।

बिमल टोपनो
वरि. लेखापरीक्षक, संबलपुर

जिंदगी

जिंदगी की राहों में,
आज मैं भी नहीं अकेला हूं,
शाम है, दर्द है, उदासी है
और साथ लाल पानी भी है।

एक खामोश सांझ-तारा है।
दूर छूटा हुआ किनारा है
इन सबों से बड़ा सहारा है।

एक धुंधली अथाह नदिया है
और भटकी हुई दिशा सी है।

नाव को मुक्त छोड़ देने में
और पतवार तोड़ देने में
एक अज्ञात मोड़ लेने में
दया अजब-सी, निराशा-सी,
सुख-पद, एक आधारहीनता-सी है।

प्यार की बात ही नहीं साथी
हर लहर साथ-साथ ले आती
प्यास ऐसी कि बुझ नहीं पाती
और यह जिंदगी किसी सुंदर
चित्र में रंगलिखी सुरा-सी है।

जिंदगी की राहों में,
आज मैं भी नहीं अकेला हूं
शाम है, दर्द है, उदासी है।
और साथ लाल पानी भी है।

आलोक सरकार
वरि. लेखापरीक्षक



"गुरु कृपा ही केवलम"

नव वर्ष के आगमन पर सभी को शुभ कामनाएं । सभी के कष्ट क्लेश दूर हों और जीवन शांति और आनंद से पूर्ण हो!

गुरुकृपा का जीवन में कितना बड़ा महत्व है , इसको कोई आसानी से नहीं समझ सकता । जो अपने गुरु से जुड़ा हुआ है - जिसकी आत्मा अपने सदगुरु के चरणों मे संलग्न है : वही इसका महत्व जान सकता है!

गुरु का जीवन में आना जन्म जन्मान्तरों के पुण्यप्रभाव से ही सम्भव है । निगुरा होकर जियें और जीवन समाप्त हो गया - निरर्थक हो गया । बिना गुरु के यह मनुष्य का चोला जो इतनी मुश्किल से मिला था, व्यर्थ ही चला जाता है!

क्योंकि गुरु से जुड़ने का अर्थ है - परमात्मा से जुड़ना । गुरु हमें सदाचरण की ओर प्रेरित करके भक्तिभाव जागृत करते हैं : भगवान के दर तक पहुंचने का मार्ग दिखाते हैं ।बिना गुरु के हम चलते तो रहेंगे पर मंज़िल को प्राप्त नही कर सकते!

गुरु को धारण करने का अर्थ है जीवन मे अनुशासनए संयम, और सदविचारों की ओर अपने जीवन को मोड़ लेना ।

जिस प्रकार बिना माँ बाप का बच्चा अपना जीवन तो जी लेता है पर उसमें निखार नही आ सकता : ठीक उसी प्रकार बिना गुरु की उंगली थामे हम चलते तो जाएंगे पर लक्ष्य तक नही पहुंच सकते!

गुरु का जीवन मे कितना बड़ा महत्व है इसके लिए तमाम पुस्तकें भरी पड़ी हैं पर गुरु की महिमा को बखान कर पाना या समझ पाना सम्भव नहीं! कहा गया है कि –

सब धरती कागद करूँ, लेखनि सब वनराये ::
सात समुद्र की मसि करूँ ,गुरुगुण लिखा ना जाए ! :::

मतलब सारी धरती को कागज बनाकर , सारी जंगल की लकड़ी को कलम बनाकर , सात समुद्रों की स्याही बनाकर भी - यदि गुरु की महिमा को लिखना चाहे तो संभव नहीं.गुरूमहिमा अवर्चनीय है!

सच्चा गुरु कभी शिष्य के भक्तिपथ का बाधक नहीं बनता - वह तो द्वार बनता हैए दीवार नहीं- उसका एकमात्र प्रयास यही होता है कि अपने शिष्य को भगवान से किस तरह मिलाया जाए!

सब रिश्ते धीरे-धीरे साथ छोड़ जाते हैं पर गुरु तो इस लोक से उस लोक तक अपना संबंध बनाकर रखते हैं । अपनी तप के प्रभाव को भी अपने शिष्यों तक बाँट कर प्रसन्न होते हैं। गुरु अंतर्यामी हैं जो बिना बताए सब हाल जानते हैं और अपनी कृपा की शक्ति से हमारे संकटों का निवारण भी कर देते हैं!

इसलिए गुरु के वफादार बनिये ,अपना पात्र तैयार कीजिये जिससे उसमे गुरुकृपा का अमृत भरा जा सके। गुरु तो अपनी कृपा हर पल लुटा रहे हैं , हम ही हैं जो अपना पात्र उल्टा करके बैठे हैं। इसलिए इस सौभाग्य का लाभ उठाएं और गुरुकृपा को अपनी अंजलि में समेटने को हर पल ततपर रहें!

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वर ।
गुरु साक्षात् परमं ब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नम: ।।
ॐ शांति ! ॐ शांति !! ॐ शांति !!!

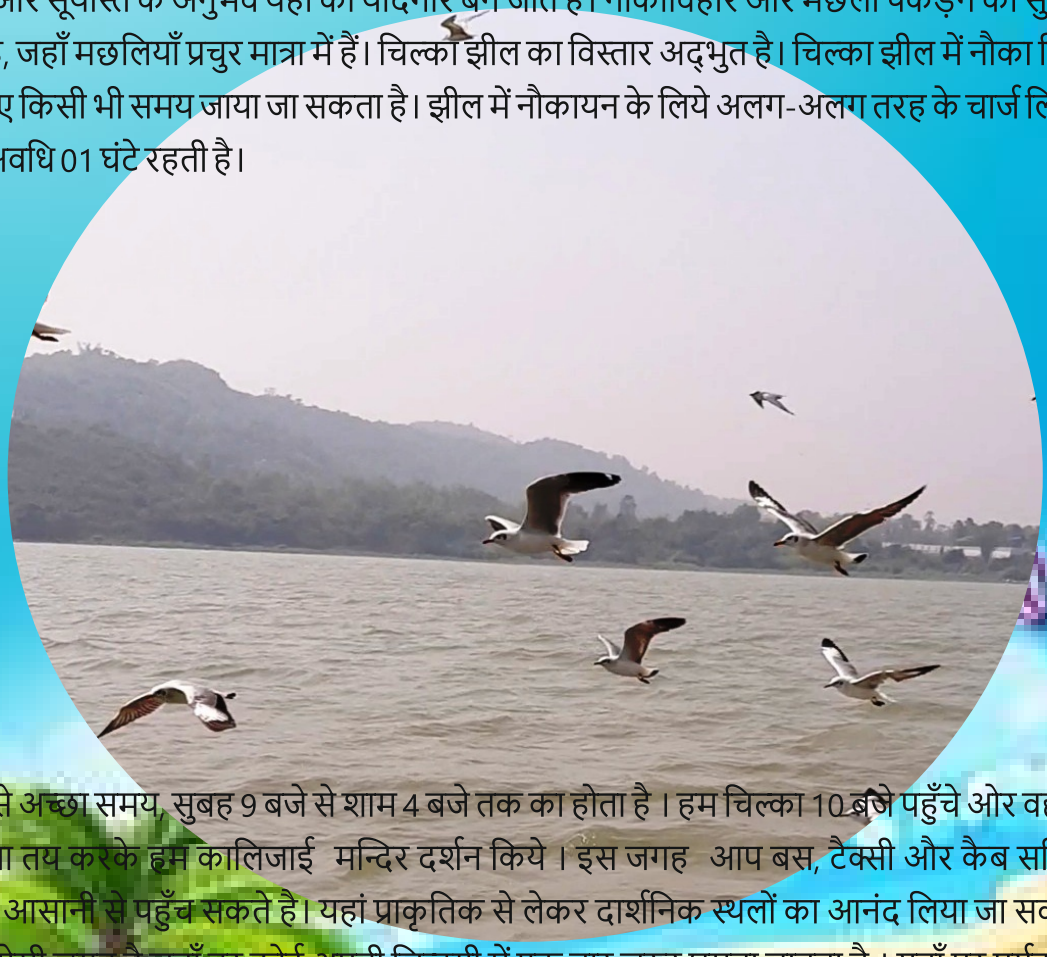
सिंगराई मुर्मू
आशुलिपिक

चिल्का यात्रा



मैं अपने परिवार के साथ फरवरी माह में चिल्का गई थी । चिल्का झील की यात्रा का सबसे अच्छा समय नवंबर से फरवरी तक के महीनो का होता है, पुरी, भुवनेश्वर और कटक जैसे ओडिशा के प्रमुख शहरों से भी आप बड़ी आसानी से चिल्का झील पहुँच सकते है। चिल्का झील भारत के राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 05 से जुड़ी हुई है। ब्रह्मपुर से 80 किलोमीटर दूर देश की सबसे बड़ी अंतर्देशीय झील है जो 1100 वर्ग किमी में फैली हुई है। चिल्का झील ओडिशा में स्थित भारत की सबसे बड़ी और विश्व की द्वितीय सबसे बड़ी समुद्री झील है। चिल्का झील में मछलियों की क़रीब 225 प्रजातियाँ मौजूद है। सर्दियों के मौसम में यहाँ बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षियों का आगमन होता है। यह झील बाहरी पर्यटकों के अलावा स्थानीय लोगों के बीच भी काफ़ी प्रसिद्ध है। झील में अनेक छोटे-छोटे द्वीप हैं जो बेहद ख़ूबसूरत प्रतीत होते हैं। यह 70 किलोमीटर लम्बी तथा 30 किलोमीटर चौड़ी है। यह समुद्र का ही एक भाग है जो महानदी द्वारा लायी गई मिट्टी के जमा हो जाने से समुद्र से अलग हो गई।

अनेक द्वीपों के साथ, यहाँ अनेक प्रकार के जलीय वनस्पतियाँ और जीवजन्तु हैं तथा पक्षी-विहार दृश्यों के लिए स्वर्ग है। सूर्योदय और सूर्यास्त के अनुभव यहाँ की यादगार बन जाते हैं। नौकाविहार और मछली पकड़ने की सुविधा इस झील में उपलब्ध है, जहाँ मछलियाँ प्रचुर मात्रा में हैं। चिल्का झील का विस्तार अद्‌भुत है। चिल्का झील में नौका विहार का आनन्द लेने के लिए किसी भी समय जाया जा सकता है। झील में नौकायन के लिये अलग-अलग तरह के चार्ज लिया जाता है। नौकायन की अवधि 01 घंटे रहती है।



यहाँ जाने का सबसे अच्छा समय, सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक का होता है । हम चिल्का 10 बजे पहुँचे ओर वहाँ बोट से एक घंटा का रास्ता तय करके हम कालिजाई मन्दिर दर्शन किये । इस जगह आप बस, टैक्सी और कैब सर्विस द्वारा चिल्का झील बड़ी आसानी से पहुँच सकते है। यहां प्राकृतिक से लेकर दार्शनिक स्थलों का आनंद लिया जा सकता है । चिल्का झील एक ऐसी जगह है जहाँ हर कोई अपनी जिन्दगी में एक बार जरुर घूमना चाहता है । यहाँ पर पर्यटक अपने परिवार, बच्चे और जोड़े के साथ घूमने के लिए आ सकते हैं। यह जगह फैमिली को बहुत पसंद आती है । यहाँ वैसे तो घूमने के 14 पर्यटक स्थल हैं, जो आप यहाँ आने के बाद घूम सकते हैं।

कालिजाई मंदिर, देवी काली को समर्पित एक प्राचीन मंदिर है । यह प्राचीन मंदिर चिल्का झील के मध्य भाग में एक छोटे से द्वीप पर बना हुआ है और चिल्का झील के आसपास के गांव में रहने वाले स्थानीय लोगों में इस मंदिर के प्रति बहुत श्रद्धा रखते है । चिल्का झील घूमने आने वाले पर्यटक के लिए भी यह मंदिर आकर्षण का बड़ा केंद्र है। कालिजाई मंदिर में देवी काली के दर्शन करने के लिये पर्यटक और श्रद्धालु नाव की सहायता से इस मंदिर तक बहुत आसानी से पहुँच सकते है। मकर संक्रांति का त्यौहार इस मंदिर में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस त्यौहार के समय इस मंदिर में श्रद्धालुओं की बहुत भारी भीड़ जुटती है।



चिल्का अपने पक्षी-विहार दृश्यों के लिए स्वर्ग से कम नहीं है । यहां पक्षियों की लगभग 160 प्रजातियां पाईं जाती है। सर्दियों के मौसम में सात-समंदर पार कर असंख्य प्रवासी पक्षी इस झील तक पहुंचते हैं। एकसाथ इतने सारे पक्षियों को देखना सच में कल्पना से परे है। चिल्का झील को पक्षियों का समूह सर्दियों के मौसम में रुकने के लिए चुनते हैं। ईरान, साइबेरिया और मध्य एशिया के पक्षी इस झील पर आते हैं। इस पक्षी अभ्यारण में अधिकांश प्रवासी पक्षी प्रजनन के लिए सर्दियों के मौसम में आते है क्योंकि मानसून के समय यह द्वीप पूरी तरह से पानी में डुब जाता है। मानसून के बाद जैसे-जैसे इस द्वीप का पानी उतरता है वैसे-वैसे द्वीप वापस दिखाई देने लग जाता है और इसके साथ यहाँ पर भारी संख्या में प्रवासी पक्षियों का जमावड़ा भी शुरू हो जाता है। इस झील में बड़ी आबादी में ग्रेलेग गीज़, पर्पल मूरहेन, फ्लेमिंगो, ब्राह्मणी पतंग, स्पॉट-बिल्ड पेलिकन, बार-हेडेड गोज़, ओपन-बिल्ड स्टॉर्क, पिंटेल, किंग फिशर, एग्रेट, एवोकेट, गल, टर्न, बगुले और सफेद-बेल वाले समुद्री ईगल पाए जाते हैं। चिल्का झील में प्रवासी पक्षियों और समृद्ध समुद्री जनजीवन के अलावा झील के आसपास के क्षेत्र में वन्यजीव और भरपूर वनस्पति भी देखने को मिलती है। झील के आसपास पाये जाने वाले वन्यजीवों में मुख्य रूप से लकड़बग्गा, चित्तीदार हिरण, ब्लैकबक और गोल्डन सियार बड़ी आसानी से देखे जा सकते है। वन्यजीवों के अलावा यह चिल्का झील इको टूरिज्म के लिए भी सबसे उपयुक्त जगहों में से एक मानी जाती है। चिल्का झील के आसपास के क्षेत्र में जलीय वनस्पति के अलावा गैर-जलीय वनस्पति भी प्रचुर मात्रा में पायी जाती है। चिल्का झील में किये गए एक पर्यावरण सर्वेक्षण के अनुसार इस झील के आसपास पेड़-पौधों की लगभग 710 से भी ज्यादा प्रजातियाँ पाई जाती है।

मेरा अनुभव काफी अच्छा रहा, क्योंकि ये यहाँ फरवरी में सर्दियों का महीना रहता है और इस समय यहाँ पर आप कई तरह के प्रवासी पक्षियों को देख सकते हैं। अपनी आसपास फैली खूबसूरती की वजह से यह जगह लोगों को बहुत पसंद आती है। यह एक पिकनिक स्पॉट भी है। हमे बहुत अच्छा लगा,काफी मस्ती भी हुई । मेरे जीवन में यह यात्रा एक यादगार यात्रा के रुप मे रह गया।

भानुमति किसान
वरि. लेखा परीक्षक

नालंदा विश्वविद्यालय

इस विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रेय गुप्त शासक कुमार गुप्त प्रथम 450-470 को प्राप्त है। इस विश्वविद्यालय को हेमंत कुमार गुप्त के उत्तराधिकारियों का पूरा सहयोग मिला। गुप्तवंश के पतन के बाद भी आने वाले सभी शासक वंशों ने इसकी समृद्धि में अपना योगदान जारी रखा। इसे महान सम्राट हर्षबर्धन और पाल शासकों का भी संरक्षण मिला। स्थानीय शासकों तथा भारत के विभिन्न क्षेत्रों के साथ ही इसे अनेक विदेशी शासकों से भी अनुदान मिला।

यह विश्व का प्रथम पूर्णतः आवासीय विश्वविद्यालय था। विकसित स्थिति में इसमें विद्यार्थियों की संख्या करीब 10,000 एवं अध्यापकों की संख्या 2000 थी। सातवीं शती में जब ह्वेनसांग आया था उस समय 10,000 विद्यार्थी और 1510 आचार्य नालंदा विश्वविद्यालय में थे। इस विश्वविद्यालय में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से ही नहीं बल्कि कोरिया, जापान, चीन, तिब्बत, इंडोनेशिया, फारस तथा तुर्की से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे। नालंदा के विशिष्ट शिक्षाप्राप्त स्नातक बाहर जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार करते थे। इस विश्वविद्यालय को नौवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त थी।

अत्यंत सुनियोजित ढंग से और विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ यह विश्वविद्यालय स्थापत्य कला का अद्‌भुत नमूना था। इसका पूरा परिसर एक विशाल दीवार से घिरा हुआ था जिसमें प्रवेश के लिए एक मुख्य द्वार था। उत्तर से दक्षिण की ओर मठों की कतार थी और उनके सामने अनेक भव्य स्तूप और मंदिर थे। मंदिरों में बुद्ध भगवान की सुन्दर मूर्तियाँ स्थापित थीं।

केन्द्रीय विद्यालय में सात बड़े कक्ष थे और इसके अलावा तीन सौ अन्य कमरे थे। इनमें व्याख्यान हुआ करते थे। अभी तक खुदाई में तेरह मठ मिले हैं। वैसे इससे भी अधिक मठों के होने ही संभावना है।मठ एक से अधिक मंजिल के होते थे। कमरे में सोने के लिए पत्थर की चौकी होती थी। दीपक, पुस्तक इत्यादि रखने के लिए आले बने हुए थे। प्रत्येक मठ के आँगन में एक कुआँ बना था। आठ विशाल भवन, दस मंदिर, अनेक प्रार्थना कक्ष तथा अध्ययन कक्ष के अलावा इस परिसर में सुंदर बगीचे तथा झीलें भी थी।

समस्त विश्वविद्यालय का प्रबंध कुलपति या प्रमुख आचार्य करते थे जो भिक्षुओं द्वारा निर्वाचित होते थे। कुलपति दो परामर्शदात्री समितियों के परामर्श से सारा प्रबंध करते थे। प्रथम समिति शिक्षा तथा पाठ्यक्रम संबंधी कार्य देखती थी और द्वितीय समिति सारे विश्वविद्यालय की आर्थिक व्यवस्था तथा प्रशासन की देख-भाल करती थी। विश्वविद्यालय को दान में मिले दो सौ गाँवों से प्राप्त उपज और आय की देख-रेख यही समिति करती थी। इसी से सहस्त्रों विद्यार्थियों के भोजन, कपड़े तथा आवास का प्रबंध होता था।



इस विश्वविद्यालय में तीन श्रेणियों के आचार्य थे जो अपनी योग्यतानुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी में आते थे। नालंदा के प्रसिद्ध आचार्यों में शीलभद्र, धर्मपाल, चंद्रपाल, गुणमति और स्थिरमति प्रमुख थे। 7 वीं सदी में ह्वेनसांग के समय इस विश्व विद्यालय के प्रमुख शीलभद्र थे जो एक महान आचार्य, शिक्षक और विद्वान थे।

प्रवेश परीक्षा अत्यंत कठिन होती थी और उसके कारण प्रतिभाशाली विद्यार्थी ही प्रवेश पा सकते थे। उन्हें तीन कठिन परीक्षा स्तरों को उत्तीर्ण करना होता था। यह विश्व का प्रथम ऐसा दृष्टांत है। शुद्ध आचरण और संघ के नियमों का पालन करना अत्यंत आवश्यक था।

इस विश्वविद्यालय में आचार्य छात्रों को मौखिक व्याख्यान द्वारा शिक्षा देते थे। इसके अतिरिक्त पुस्तकों की व्याख्या भी होती थी। शास्त्रार्थ होता रहता था। दिन के हर पहर में अध्ययन तथा शंका समाधान चलता रहता था।

यहाँ महायान के प्रवर्तक नागार्जुन, वसुबन्धु, असंग तथा धर्मकीर्ति की रचनाओं का सविस्तार अध्ययन होता था। वेद, वेदांत और सांख्य भी पढ़ाये जाते थे। व्याकरण, दर्शन, शल्यविद्या, ज्योतिष, योगशास्त्र तथा चिकित्साशास्त्र भी पाठ्यक्रम के अन्तर्गत थे। नालंदा की खुदाई में मिली अनेक काँसे की मूर्तियो के आधार पर कुछ विद्वानों का मत है कि कदाचित् धातु की मूर्तियाँ बनाने के विज्ञान का भी अध्ययन होता था। यहाँ खगोलशास्त्र अध्ययन के लिए एक विशेष विभाग था।

नालंदा में सहस्रों विद्यार्थियों और आचार्यों के अध्ययन के लिए, नौ तल का एक विराट पुस्तकालय था जिसमें ३ लाख से अधिक पुस्तकों का अनुपम संग्रह था।

यहां छात्रों के रहने के लिए 300 कक्ष बने थे, जिनमें अकेले या एक से अधिक छात्रों के रहने की व्यवस्था थी। एक या दो भिक्षु छात्र एक कमरे में रहते थे। कमरे छात्रों को प्रत्येक वर्ष उनकी अग्रिमता के आधार पर दिये जाते थे। इसका प्रबंधन स्वयं छात्रों द्वारा छात्र संघ के माध्यम से किया जाता था।

यहां छात्रों का अपना संघ था। वे स्वयं इसकी व्यवस्था तथा चुनाव करते थे। यह संघ छात्र संबंधित विभिन्न मामलों जैसे छात्रावासों का प्रबंध आदि करता था। छात्रों को किसी प्रकार की आर्थिक चिंता न थी। उनके लिए शिक्षा, भोजन, वस्त्र औषधि और उपचार सभी निःशुल्क थे। राज्य की ओर से विश्वविद्यालय को दो सौ गाँव दान में मिले थे, जिनसे प्राप्त आय और अनाज से उसका खर्च चलता था।

13 वीं सदी तक इस विश्वविद्यालय का पूर्णतः अवसान हो गया। मुस्लिम इतिहासकार मिनहाज़ और तिब्बती इतिहासकार तारानाथ के वृत्तांतों से पता चलता है कि इस विश्वविद्यालय को तुर्कों के आक्रमणों से बड़ी क्षति पहुँची। तारानाथ के अनुसार तीर्थिकों और भिक्षुओं के आपसी झगड़ों से भी इस विश्वविद्यालय की गरिमा को भारी नुकसान पहुँचा। इसपर पहला आघात हुण शासक मिहिरकुल द्वारा किया गया। 1199 में तुर्कआक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इसे जला कर पूर्णतः नष्ट कर दिया।



प्रसिद्ध चीनी विद्वान यात्री ह्वेन त्सांग और इत्सिंग ने कई वर्षों तक यहाँ सांस्कृतिक व दर्शन की शिक्षा ग्रहण की। इन्होंने अपने यात्रा वृत्तांत व संस्मरणों में नालंदा के विषय में काफी कुछ लिखा है। ह्वेनत्सांग ने लिखा है कि सहस्रों छात्र नालंदा में अध्ययन करते थे और इसी कारण नालंदा प्रख्यात हो गया था। दिन भर अध्ययन में बीत जाता था। विदेशी छात्र भी अपनी शंकाओं का समाधान करते थे। इत्सिंग ने लिखा है कि विश्वविद्यालय के विख्यात विद्वानों के नाम विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर श्वेत अक्षरों में लिखे जाते थे।

इस विश्वविद्यालय के अवशेष चौदह हेक्टेयर क्षेत्र में मिले हैं। खुदाई में मिली सभी इमारतों का निर्माण लाल पत्थर से किया गया था। यह परिसर दक्षिण से उत्तर की ओर बना हुआ है। मठ या विहार इस परिसर के पूर्व दिशा में व चैत्य (मंदिर) पश्चिम दिशा में बने थे। इस परिसर की सबसे मुख्य इमारत विहार-1 थी। आज में भी यहां दो मंजिला इमारत शेष है। यह इमारत परिसर के मुख्य आंगन के समीप बनी हुई है। संभवत: यहां ही शिक्षक अपने छात्रों को संबोधित किया करते थे। इस विहार में एक छोटा सा प्रार्थनालय भी अभी सुरक्षित अवस्था में बचा हुआ है। इस प्रार्थनालय में भगवान बुद्ध की भग्न प्रतिमा बनी है। यहां स्थित मंदिर नं. ३ इस परिसर का सबसे बड़ा मंदिर है। इस मंदिर से समूचे क्षेत्र का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है। यह मंदिर कई छोटे-बड़े स्तूपों से घिरा हुआ है। इन सभी स्तूपों में भगवान बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं में मूर्तियां बनी हुई है।

नालंदा पुरातत्व संग्रहालय

विश्वविद्यालय परिसर के विपरीत दिशा में एक छोटा सा पुरातात्विक संग्रहालय बना हुआ है। इस संग्रहालय में खुदाई से प्राप्त अवशेषों को रखा गया है। इसमें भगवान बुद्ध की विभिन्न प्रकार की मूर्तियों का अच्छा संग्रह है। इनके साथ ही बुद्ध की टेराकोटा मूर्तियां और प्रथम शताब्दी के दो मर्तबान भी इस संग्रहालय में रखा हुआ है। इसके अलावा इस संग्रहालय में तांबे की प्लेट, पत्थर पर खुदे अभिलेख, सिक्के, बर्त्तन तथा 12वीं सदी के चावल के जले हुए दाने रखे हुए हैं।

नव नालंदा महाविहार

यह एक शिक्षण संस्थान है। इसमें पाली साहित्य तथा बौद्धधर्म की पढाई तथा शोध होती है। यह एक नया स्थापित संसच्थान है। इसमें दूसरे देशों के छात्र भी पढाई के लिए यहाँ आते है।

राजु कुमार
आ.प्र.प्रचालक "बी"

17वीं बिहार विधानसभा चुनाव 2020

हाल में ही 17वीं बिहार विधानसभा चुनाव संपन्न हुआ । कोविड-19 के दौरान संपन्न होने वाला यह भारत का पहला चुनाव है ।इस चुनाव में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री एच आर श्रीनिवास थे जिन्हें महामारी के दौरान सफलतापूर्वक चुनाव संपन्न कराने के लिए चुनाव आयोग द्वारा प्रशंसा भी मिली।

बिहार विधानसभा चुनाव 3 चरणों में संपन्न हुआ । 243 विधानसभा सीटों के लिए 3 चरणों में चुनाव क्रमशः इस प्रकार हुए- 28 अक्टूबर -71 सीट, 3 नवंबर -91 सीट और 7 नवंबर -78 सीटों के लिए। इस चुनाव के लिए भारतीय चुनाव आयोग द्वारा 25 सितंबर 2020 को आचार संहिता लागू की गई।

इस चुनाव में कोरोना महामारी के कारण कई बदलाव करने पड़े जैसे -उम्मीदवारों को ऑनलाइन नामांकन की सुविधा, घर-घर जाकर मात्र 5 लोगों को चुनाव प्रचार करने की अनुमति ,मतदान की अवधि को 1 घंटा बढ़ाना, पोस्टल बैलट द्वारा वृद्ध एवं अस्वस्थ लोगों को मतदान का अधिकार, दोगुनी से भी अधिक संख्या में मतदान केंद्र का निर्माण आदि।

इस चुनाव में मुख्यमंत्री पद के छह उम्मीदवार थे , जैसे एनडीए की तरफ से श्री नीतीश कुमार ,महागठबंधन- तेजस्वी यादव ,ग्रैंड डेमोक्रेटिक सोशल फ्रंट -उपेंद्र कुशवाहा ,पीडीए -पप्पू यादव ,प्लूरल्स पार्टी -पुष्पम प्रिया और लोजपा -चिराग पासवान।

चुनाव में मुख्य मुद्दा रोजगार बना रहा ,जिसे लेकर सभी दलों ने मतदाताओं को लुभाने की कोशिश की जहां महागठबंधन की तरफ से 10 लाख नौकरियों का वादा किया गया वहीं एनडीए ने 19 लाख नौकरियों की बात कही इसके साथ ही उद्योग ,प्रवासी ,स्वास्थ्य, सुरक्षा का मुद्दा भी चर्चा में रहा।

इस चुनाव में वोटिंग का कुल प्रतिशत 16वीं विधानसभा में 56.8% की तुलना में अधिक 57.05% रहा जिसमें पुरुष वोटिंग 54.7% और महिला वोटिंग लगभग 60% रहा।

10 नवंबर 2020 को चुनाव का परिणाम घोषित किया गया जिसमें एनडीए गठबंधन को 125 वोटों के साथ बहुमत प्राप्त हुआ। इस चुनाव में "साइलेंट वोटरों " की भूमिका काफी अहम रही ।एनडीए महागठबंधन के अनुसार इन्हीं के बदौलत एनडीए को जीत हासिल हुई।

चुनाव परिणाम घोषित करने के पश्चात 12 नवंबर 2020 को आदर्श आचार संहिता को समाप्त कर दिया गया और 16 नवंबर 2020 को श्री नीतीश कुमार ने सातवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली।

विक्रान्त आनन्द
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

तस्मानिया यात्रा

नए साल में दुनिया जब नए महामारी से मुकाबला कर रही है तो फिलहाल इस वर्ष बाहर भ्रमण करने की कोई योजना नहीं है । मैं अपने सन 2019 के अविस्मरणीय यात्राओं में से एक ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप के अंतर्गत तस्मानिया के यात्रा वृतांत के बारे में बताना चाहती हूँ । जी हाँ! वही सुंदर द्वीप! तस्मानिया जिसकी खोज 1643 ई. में की गई थी । तस्मानिया आस्ट्रेलिया के दक्षिण में स्थित राज्य है। बास जलसन्धि ऑस्ट्रेलिया को तस्मानिया से अलग करती है। इसे यहाँ के स्थानीय लोग 'तस्सी' के नाम से पुकारते हैं । इसकी यात्रा बहुत ही अच्छा अनुभव प्रदान करती है ।

,पोकीज़, गेम्स आर्केड और बच्चों का खेल क्षेत्र मिलेगा है जो आपको व्यस्त रखने के लिए काफी है । तस्मानिया में ब्रूनी द्वीप पर भी मुझे घुमने का मौका मिला । यह नाम सुनने में तो हास्यप्रद लगता है पर यह बहुत अच्छी जगह है ।यहाँ वाटर स्पोर्ट्स , मछली पकड़ने जैसे क्रियाकलाप किए जाते है । यह द्वीप अपने खान-पान के लिए मशहूर है ।यहाँ के स्थानीय कारीगर काफी और चीज बनाने के लिए जाने जाते हैं ।मैंने भी यहाँ के स्वादिष्ट 'चीज' का लुफ्त उठाया ।इसके बाद मैं क्रेडल पहाड़ गई । यह एक राष्ट्रीय उद्यान है । यह किसी स्वर्ग से कम नहीं है । इस स्वर्ग की मेरी यात्रा एक शानदार बोर्डवॉक के साथ शुरू हुई ।यहाँ के व्यू पॉइंट आश्चर्यजनक थे ।



यहाँ की सड़कें युकोलिप्ट्स के पेड़ से घिरे हैं । समुद्र एवं पहाड़ के संगम के इस मनोरम दृश्य को देखकर मुझे परियों की कहानी की याद दिलाती है । इसकी सुंदरता इतनी अच्छी है कि एक बार यहाँ आने पर आपको बार-बार आने का मन करेगा । सबसे पहले मैं सिडनी गई । वैसे तो हवाई मार्ग से तस्मानिया जाना बेहद सुगम है पर मैंने तस्मानिया जाने के लिए समुद्र मार्ग चुना । समुद्र मार्ग से जाते समय आनंदमय व्यतीत होता है और समुद्र का नजारा भी देखने को मिलता है । मैं मेलबर्न बंदरगाह से पानी के जहाज में सुबह सात बजे सुबह सवार हुई । समुद्र मार्ग से यात्रा करने में 9-11 घंटे लगते हैं । जहाज पर विभिन्न क्रियाकलापों के प्रचुर साधन मौजूद थे । आप यात्रा के दौरान बिलकुल बोर नहीं होंगे ।यहाँ आपको बार , रेस्टोरंट ,सिनेमा , दुकानें ,पर्यटक सूचना केंद्र,ए.टी.एम (लेकिन केवल जब जहाज बंदरगाह में लगी हो)

यहाँ के जानवरों में तस्मानियन वोम्बैट, तस्मानियन डेविल ,और कंगारू प्रमुख थे ।निस्संदेह, तस्मानिया में क्रैडल माउंटेन मेरी पसंदीदा जगह थी,खराब मौसम के बावजूद, ये मेरे परम पसंदीदा पहाड़ यात्रा बन गई । ऑस्ट्रेलिया में सबसे खूबसूरत द्वीप राज्य की मेरी यात्रा एक यादगार यात्रा बन गई ।

यह यात्रा पूरी तरह से शानदार रही । इस खूबसूरत छोटे शहर में जहाँ भी मैं गई मुझे मैत्रीपूर्ण आतिथ्य सत्कार मिला । यहाँ के प्रेम , धीमी गति से जीवन, सुंदर सैर, झरनों की प्रचुरता,समुद्र तटों और पहाड़ों के साथ-साथ आस-पास के वन्यजीव एवं सबसे शानदार यहाँ के खान-पान (शहद और पनीर) मुझे हमेशा याद आती रहेगी !!!

स्वाति महापात्रा
पिता- श्री बिक्रम महापात्रा, लेखा परीक्षक

हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए आवश्यक सुझाव-

- उपस्थिति पंजिका मे हस्ताक्षर हिन्दी में करें।
- सभी प्रकार की छुट्टियों का आवेदन हिन्दी में करें।
- डाक रजिस्टर में प्रवृष्टियाँ हिन्दी में कर सकते हैं।
- लिफाफों पर पतें हिन्दी में या द्विभाषी में लिख सकते है।
- फाइलों, रजिस्टरों, फोल्डरों आदि पर विषय हिन्दी में लिख सकते हैं।
- फाईलों पर टिप्पणी हिन्दी में लिख सकते हैं।
- हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी मे देना अनिवार्य हैं।
- अभिवादन या सभा को संबोधन हिन्दी मे कर सकते हैं।
- धारा ३ (३) के अंतर्गत सभी पत्राचार द्विभाषी में जारी करना अनिवार्य हैं।
- रबड़ की मोहरें,बोर्ड,नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्र शीर्ष (लेटर हेड), विजिटिंग कार्ड आदि द्विभाषी हो।
- कार्यशालाओं, संगोष्ठियों, व्याख्यानों आदि के बोर्ड एवं बैनर, निमंत्रण पत्र, पोस्टर आदि समग्र द्विभाषी हो।
- जिन स्थानों पर द्विभाषी सूचनाएं लगाई जाएं उन सभी स्थानों पर हिन्दी ऊपर और अंग्रेजी नीचे लिखी होनी चाहिए।
- सभी फार्मों का द्विभाषी रुप ही प्रयोग करें।
- कार्यालयों मे आयोजित हिन्दी पखवाड़ा, हिन्दी कार्यशाला एवं विभिन्न गतिविधियों मे बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेवें।

संपादक मंडली

हिन्दी पखवाड़ा- 2019

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर में दिनांक 13 सितंबर से 27 सितंबर 2019 तक हिन्दी पखवाड़ा का सफल आयोजन किया गया। इस दौरान विविध प्रतियोगिताओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का पूरे उत्साह के साथ आयोजन किया गया।

13 सितंबर 2019 को हिन्दी पखवाड़ा का शुभारंभ कार्यालय अध्यक्ष श्री सौरभ मल्लिक, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा के द्वारा किया गया तथा वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा ने सभा के समक्ष पखवाड़ा के कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की। तत्पश्चात प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा के द्वारा सभा को संबोधित किया गया। प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा ने कार्यालय मे हिन्दी के प्रयोग पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्रतियोगिताओं मे बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए अधिकारी/कर्मचारियों को प्रेरित किया।

14 सितम्बर, हिन्दी दिवस, के दिन अवकाश होने के कारण 13 सितम्बर को सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा ने केन्द्रीय गृह मंत्री माननीय अमित साह जी के संदेश से सभा को अवगत कराया। तत्पश्चात हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

13 सितंबर से 24 सितंबर, 2019 तक मुख्यालय, भुवनेश्वर में विविध हिन्दी गतिविधियाँ संपन्न की गई जिसमें क्रमशः आशुभाषण, श्रुत-लेखन, हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी। इन संपूर्ण प्रतियोगिताओं एवं आयोजनों में कार्यालय के समस्त अधिकारी/कर्मचारी गण ने उत्साह के साथ भाग लिया।

27 सितंबर, 2019 को हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित किया गया जिसमें कार्यालय के समस्त अधिकारी/कर्मचारी गण के साथ-साथ उनके पारिवारिक सदस्य भी उपस्थित हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा ने अपने करकरमलों से दीप-प्रज्वलन कर समारोह की शुरुआत की । इस दौरान प्रतियोगिताओं मे उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारी गण को पुरस्कृत किया गया। तत्पश्चात कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "धर्मपद" के आठवें अंक का विमोचन किया गया। इसके बाद कार्यालयीन कर्मियों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस कड़ी में कार्यालयीन कर्मियों के द्वारा हिन्दी नाटक "बीमा नहीं बना तो भरो जुर्माना" का प्रदर्शन किया गया जो उन लोगों के लिए एक संदेश है जो जीवन मे रिश्तों के बजाय पैसों को अधिक महत्व देते हैं। सफल एवं आकर्षक प्रस्तुति के लिए अध्यक्ष महोदय के द्वारा नाटक दल को प्रोत्साहित करते हुए बधाई दिया गया।

अंत में सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए हिन्दी पखवाड़ा 2019 के समापन की घोषणा की ।

हिन्दी के प्रगामी प्रयोग मे वृद्धि हेतु इस कार्यालय की तरफ से यह एक सफल एवं प्रशंसनीय प्रयास था।

राजभाषा अनुभाग

प्रतियोगिता पुरस्कार

क्र.	प्रतियोगिता	स्थान	अधिकारी/कर्मचारी का नाम/पद
1	श्रुति लेखन	प्रथम	श्री प्रभात रंजन, लेखापरीक्षक
2		द्वितीय	श्री श्रीकांत कुमार साहु, वरि. लेखापरीक्षक
3		तृतीय	श्री रामचंद्र राव, लेखापरीक्षक
4	निबंध लेखन	प्रथम	श्री अरविंद सतपथी, लिपिक
5		द्वितीय	श्री दीपक कुमार दास, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
6		तृतीय	श्री श्रीकांत कुमार साहु, वरि. लेखापरीक्षक
7			श्री प्रभात रंजन, लेखापरीक्षक
8	आशुभाषण	प्रोत्साहन	श्री गोविन्द दीप, स.ले.प.अ
9			श्री ए.के. राय, वरि. लेखापरीक्षक
10			श्री विभास चंद्र, स.लेप.अ
11			श्री मानस रंजन जेना, लेखापरीक्षक

सांस्कृतिक कार्यक्रम में हिस्सा लेने वालों को पुरस्कार /प्रमाण पत्र प्रदान करना

1.	निर्देशक		श्री निलांचल चौधरी
1	मुख्य पात्र	बीमा एजेंट	श्री बिक्रम मिश्रा, लेखापरीक्षा अधिकारी
2.		मंगू मेंगोराज	श्री श्रीकांत कुमार साहु, वरि. लेखापरीक्षक
3		सरला	श्रीमती भानुमती किसान, लेखापरीक्षक
4		पागल	श्री कृष्णचन्द्र बेहेरा, एमटीएस
5		चाय वाला	श्री अशोक कुमार राय, वरि. लेखापरीक्षक
6		ट्रैफिक पुलिस	श्री बिक्रम महापात्र, लेखापरीक्षक
7		बड़े साब	श्री रामचंद्र राव, लेखापरीक्षक
	अतिथि उपस्थिति		सुश्री होसाना टोपनो, वरि. लेखापरीक्षक
			श्रीमति दीप्तीमई साहु, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी
			श्री सिंगराइ मुर्मू, आशु लिपिक
			श्री दीपक दास, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

आपके पत्र

महालेखाकार (लेखा एवं हक)
का कार्यालय, कर्नाटका,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग

OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (A & E)
KARNATAKA
Indian Audit & Accounts Department

सं.हिं.क./मा.ले./2019-20/339 दिनांक:18.02.2020

सेवा में,

निदेशक,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, तीसरी मंजिल,
उत्तर खंड, सामंत विहार,
भुवनेश्वर-751017

विषय- कार्यालय की वार्षिक पत्रिका " धर्मपद" के आठवें अंक की पावती प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित वार्षिक पत्रिका "धर्मपद " के आठवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। रचनात्मकता से परिपूर्ण पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत ही मनोरम व मनमोहक है। 'हमारा भारत', 'जिंदगी बिजी बिजी, ' नाराजगी, 'मां गंगा, 'सब आपका आशीर्वाद है, आदि रचनाएँ रुचिकर एवं सराहनीय ही नहीं बल्कि संग्रहणीय भी हैं। अन्य सभी रचानाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

सधन्यवाद !

भवदीय,
(उदय प्रताप सिंह) 25/2/2020
हिंदी अधिकारी/हिंदी कक्ष

डाक पेटी संख्या: 5329 /5369, पार्क हाउस रोड, बेंगलूर - 560 001. दूरभाष : 080-22379335 फैक्स : 080-22264691
P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BANGALORE - 560 001. Tel : 080-22379335 Fax : 080-22264691

दूरभाष/Telephone- 2225766
2224812

फैक्स/तार Tele — Fax – 0612-2225977 | Gram : ACCOUNTS

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

कार्यालय हिन्दी कथा/लेखा/पत्रिका-जवाब/(2019-20) -119
दिनांक 10/02/2020

सेवा में

निदेशक,
भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, तीसरी मंजिल,
उत्तर खंड, सामन्त विहार, भुवनेश्वर–751017

विषय :– कार्यालयीन वार्षिक पत्रिका ''धर्मपद'' 8वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्रांक–सं0–राभाअ/वार्षिक पत्रिका/धर्मपद/2018/917 दिनांक 16.10.2019 द्वारा राजभाषा वार्षिक पत्रिका ''धर्मपद'' 8वें अंक की एक प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का नया लुक लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री विकांत आनंद का लेख ''सुख दुख जीवन के पहलू'', श्री अक्षय कुमार मृदुली की कविता ''बेटी'' एवं श्री मनीष कुमार का लेख ''अच्छे दिन की सौगात'', काफी रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

वरीय लेखा अधिकारी,
(हिन्दी कक्ष)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवम् सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा)
मध्य प्रदेश, ऑडिट भवन, झांसी रोड, ग्वालियर

क्रमांक/प्रशासन/हिन्दी कार्यान्वयन कक्ष/सम्मति/जावक - ८०९ दिनांक- 28/05/2020

प्रति,

निदेशक,
(प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय)
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन,
तीसरी मंजिल , उत्तर खंड, सामंत विहार,
भुवनेश्वर -751017

विषय- हिन्दी पत्रिका "धर्मपद" के अष्टम अंक की प्राप्ति के संबन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "धर्मपद" के अष्टम अंक की प्राप्ति हुई। एतदर्थ धन्यवाद। राजभाषा के प्रचार- प्रसार और कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने में आपकी पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।
पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र एवम् सभी रचनाएं अत्यंत ज्ञानवर्धक, नीतिपरक एवम् रोचक हैं। कविताएं तथा लेख भावपूर्ण, सार्थक व मन को छू लेनेवाली हैं। पत्रिका प्रकाशन में आपका कार्य सराहनीय है।

पत्रिका में समस्त रचनाएं सराहनीय हैं विशेषकर- सुश्री सुषमा चौबे की "आओ घर परिवार बचाएं" वर्तमान जीवन के अटल सत्य को उजागर करती है। श्री गोविन्द दीप की "सब उसका आशीर्वाद है" कर्म की प्रधानता पर बल देती है एवं "खाने में प्लास्टिक" महत्वपूर्ण जानकारी से परिपूर्ण है तथा श्री स्वस्तिक सारंगी की "मत हो उदास" सार्थक उपदेश प्रस्तुत करती है। उक्त रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों के सफल संपादन एवम् लगातार प्रकाशन के लिये हार्दिक बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की मंगलकामनाओं के साथ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्ष

प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एंव पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO MEMBER AUDIT BOARD, BENGALURU -560001.

सं.हि.प्रशा.-2019-20/ 322 दिनांक-04.02.2020

सेवा में,

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
पूर्व तट, रेलवे
भुनेश्वर, ओडिशा - 751017

विषय:- प्रशंसा पत्र।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "धर्मपद" के आठवे अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ती हुई है। पत्रिका में सम्मलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद

भवदीय

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड का कार्यालय, राँची - 834002

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
JHARKHAND, RANCHI - 834002

दिनांक/Date .....

पत्रांक- हिन्दी प्रकोष्ठ/ले.प./2019-20/ 506 दिनांक-4/01/2020

सेवा में,

निदेशक,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, तीसरी मंजिल,
उत्तर खंड, सामंत विहार , भुवनेश्वर -751017

विषय- हिन्दी पत्रिका 'धर्मपद ' के 8 वें अंक की प्राप्ति।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'धर्मपद' के 8 वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चस्तर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

04/01/2020
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी प्रकोष्ठ)

दूरभाष/Telephone : 0651-2411670/2413690 फैक्स/Fax : 0651-2412517/2413701 ई-मेल/e-mail : agaujharkhand@cag.gov.in

---

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक
Date : 17.07.2020

सेवा में,

निदेशक
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन, तीसरी मंजिल, उत्तर खंड,
सामन्त विहार, भुवनेश्वर-751017

विषय:- पत्रिका की पावती प्रेषित करने संबंधी।
संदर्भ:- पत्र संख्या रा.भा.अ./वार्षिक पत्रिका/धर्मपद/2018/917 दिनांक 16.10.2019

महोदय/महोदया,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिन्दी पत्रिका "धर्मपद" के आठवें अंक वर्ष 2019-20 की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की यह प्रति भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पोस्ट – मांदर, जीरो प्वाइंट, रायपुर – 493 111 (छत्तीसगढ़)
Post - Mandhar, Zero Point, Raipur - 493 111 (Chhattisgarh)

भारत सरकार
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla-171003

क्रमांक : हिंदी कक्ष /बाह्य पत्रिका/ले.प. /2019-2020 / 1224 दिनांक- 13/03 /2020

सेवा में ,

निदेशक,
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
पूर्व तट रेलवे,
भुवनेश्वर (ओडिसा)- 751017

विषय - कार्यालय की वार्षिक पत्रिका 'धर्मपद' के आठवें अंक की प्राप्ति के बारे में।

महोदय/महोदया ,

आपके कार्यालय के पत्र फा. संख्या : रा.भा.अ./ वार्षिक पत्रिका/ धर्मपद/2018/917 दिनांक 16-10-2019 द्वारा प्रेषित पत्रिका 'धर्मपद' के आठवें अंक की प्रति प्राप्त हुई है। सहर्ष धन्यवाद।

इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ पठनीय एवं रोचक है। 'यारों अब थकने लगे है, खाने में प्लास्टिक' रचनाओं ने विशेष ध्यान आकृष्ट किया। पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादन मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनायें।

भवदीय
13/3/2020
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)



गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर पूर्व तट रेलवे मुख्यालय का भवन तीन रंगों में सुसज्जित

मूल्य - राजभाषा के प्रति निष्ठा